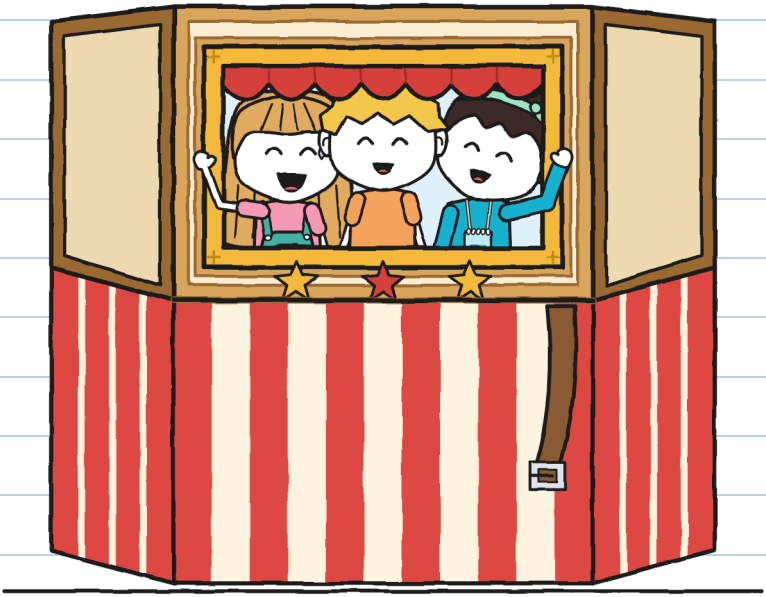
नामुमकिन डिलीवरी · 6

एक जगह, हम तीन

LinguAula



(मुनी की डायरी)

साइल S
शुरुआती स्तर · 7+

नामुमकिन डिलीवरी · 6
एक जगह, हम तीन

लेखन और चित्र: LinguAula

साइज़ S · शुरुआती स्तर · 7+

हिन्दी संस्करण: LinguAula

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

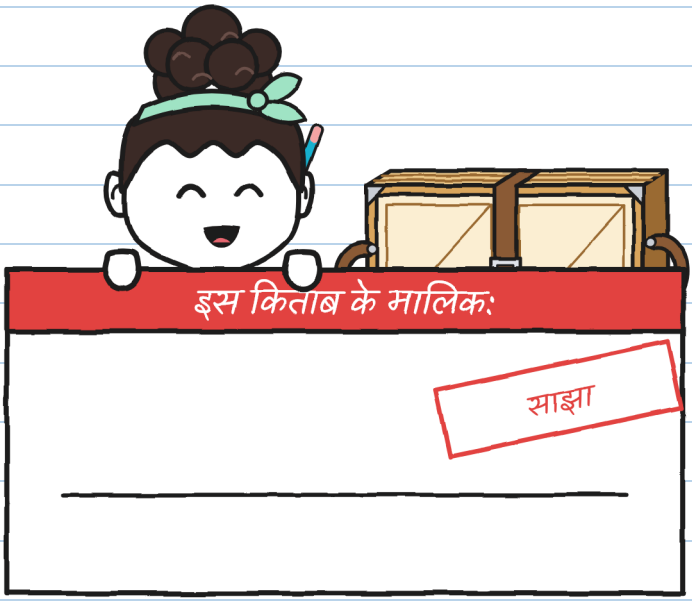
कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

सीरीज़ की छठी किताब। पिछली किताबें: "यह पार्सल काटता है", "बादल गरजने से पहले न खोलें", "वापस आया, प्लीज़", "यहाँ नहीं, चूरा!" और "एक केक, हम दो"।

LinguAula

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

यह तीन लोग उठाते हैं। मैंने हतूथा चुन लिया। –ज.



साझा। हम समाते हैं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिले, तो इसे तह करके लौटाना।

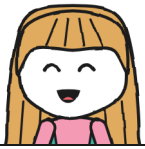
सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उस चीज़ पर लगती है जो सिर्फ़ कहानी में होती है। असली ड्रैगन नहीं होते। पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली दुलाई के लिए पन्ना 76 देखो। –ज.

कौन कौन है



गुनी। सेंटीमीटर में नापता है। इस हफ़्ते एक और चीज़ भी गिनता है।



जूलिता। उसे रास्ता पता है। उसे समझाना दूसरी बात है।



नोआ। जूलिता की पुरानी दोस्त। क़दमों से नापती है: क़दम हमेशा उसके साथ रहते हैं।



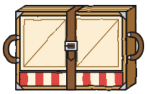
आइरीन। थिएटर वर्कशॉप चलाती हैं। रास्ता नहीं बतातीं: "रुको" कहती हैं।



टोन्यो। "बिजली" का और दुकान का। समय नापता है, राय नहीं देता। लगभग।



मारा। पार्सल उधार देती है। डिब्बा नहीं छोड़तीं।



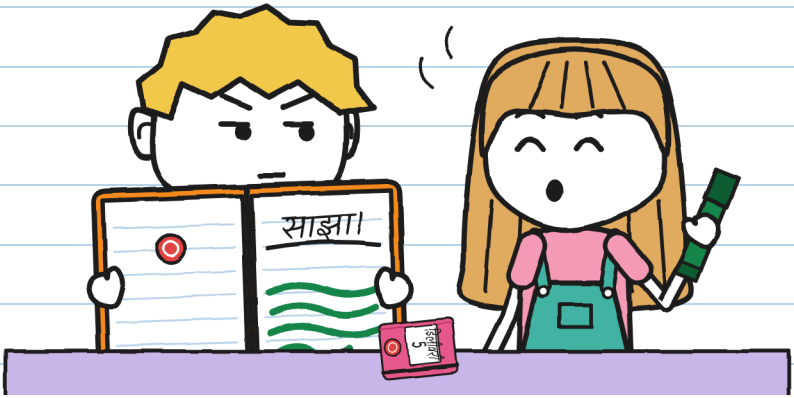
नं. 6। एक थिएटर जो एक डिब्बे में समा जाता है। पट्टा कोई न पकड़े, तो जहाँ मन करे वहाँ खुल जाता है।



R. प्रेषक। इस बार इन्वेंटरी में एक लाइन छूट गई है।

डिलीवरी डायरी 6
गुनी की

साझा।



डायरी नंबर 5 एक घड़ी में दो सुइयों के साथ ख़त्म हुई। यह वाली नारंगी है, संतरे जैसी। इस पर भी दुकान की मुहर है।

पहले पन्ने पर मैंने एक शब्द लिखा। आधा पन्ना ख़ाली छोड़ दिया, कि क्या पता। वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

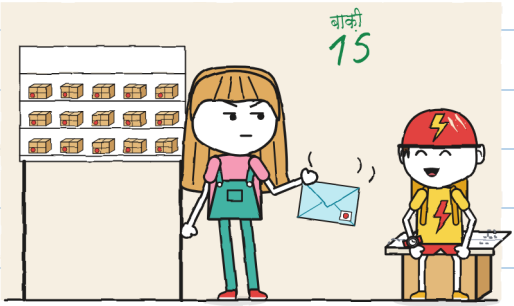
मैंने पहला पन्ना अपनी लिखावट के साथ साझा कर लिया है। –ज.

अध्याय 1

तीन लोग क्यों चाहिए?

सोमवार को मैं स्कूल से निकला। जूलिता काउंटर पर लिफ़ाफ़ा लिए इंतज़ार कर रही थी। वह फ़िरोज़ी था और बंद था।

"डाकिया लाया है। 'नामुमकिन डिलीवरी की दुकान'। मैंने अब तक नहीं खोला।"
"कितनी देर से?"
"अट्ठाईस मिनट," टोन्यो ने अपने डिब्बे से घड़ी देखते हुए कहा। "मोहल्ले का रिकॉर्ड।"

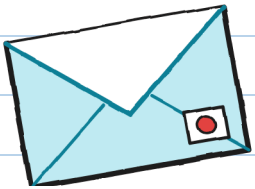


यह मेरा नहीं था। तिगुना भारी लगा। –ज.

मारा ने उसे नाख़ून से खोला।

मैं आइरीन हूँ, कम्युनिटी सेंटर की थिएटर वर्कशॉप की प्रभारी।
इन्वेंटरी अपडेट करते समय मुझे एक लाइन मिली:
"तह होने वाला छोटा थिएटर: पाना बाक़ी।"
क्या वह आपके पास है?
शनिवार 31 को मोहल्ले का मुक़ाबला है।
अगर छोटा थिएटर तह होकर हमारे आँगन तक पहुँच जाए,
तीन लोगों की टीम उसे लेकर आए, तो मैं वहीं दस्तख़त कर दूँगी।
नोआ की टीम में तीन लोगों की जगह है और अभी सिर्फ़ वही है।

जूलिता: मैं हूँ! अब मैं थिएटर करती हूँ।
किसी ऐसे को ले आओ जिसे पार्सलों का पता हो। –नोआ

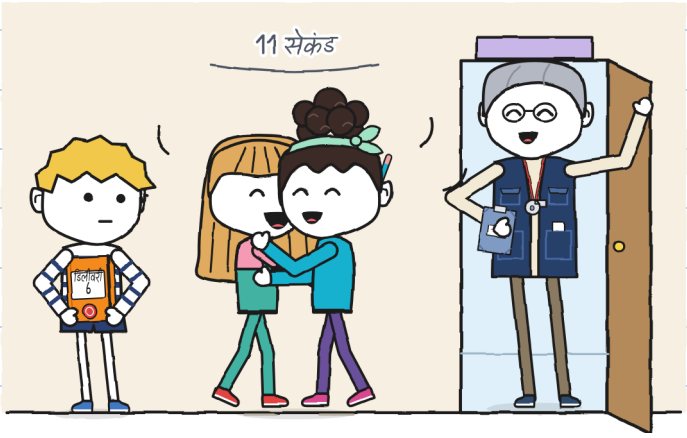


"जिसे पार्सलों का पता हो।" वह मैं था। "पार्सलों" मुझे अच्छा लगा। "किसी ऐसे," कम।

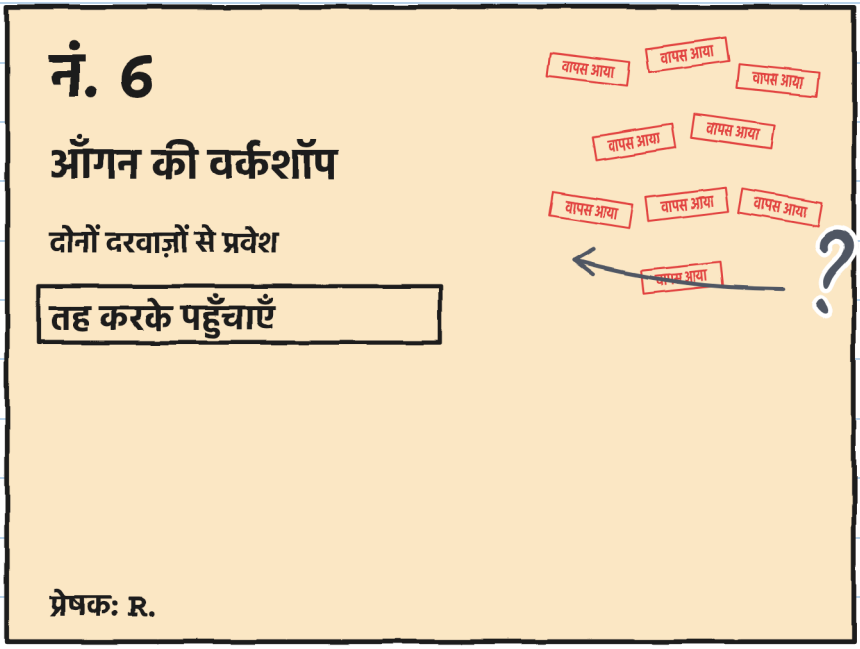
पाँच बजे आइरीन और नोआ आईं। आइरीन के पास एक फ़ाइल थी, जेबों वाली वास्कट और गले में एक सीटी। नोआ के पास लटकी हुई एक नोटबुक थी और कान के पीछे एक फ़िरोज़ी पेंसिल।

जूलिता और नोआ बहुत देर गले मिलीं। मुझे नापने का वक़्त मिल गया: ग्यारह सेकंड। मैं डायरी लिए एक तरफ़ खड़ा रहा। डायरी इसके भी काम आती है: हाथ में कुछ रखने के लिए।

"यह गुनी है," जूलिता ने कहा। "इसे पार्सलों का पता है।"
"हाय, पार्सलों वाले गुनी," नोआ ने कहा। और उसने मेरा नाम अपनी नोटबुक में लिख लिया।



मारा स्टूल पर चढ़ीं और शेल्फ़ से नं. 6 उतारा। बाक़ी सबकी तरह एक डिब्बा।



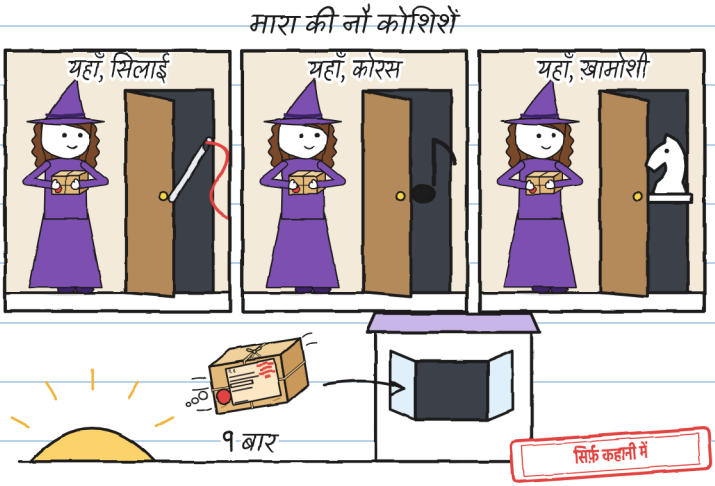
"नौ मुहरें," जूलिता ने कहा।
"'दोनों दरवाज़े,'" नोआ ने पढ़ा। "कौन-से दो दरवाज़े?"

आइरीन को नहीं पता था। मारा को भी नहीं। मैंने उसे प्रश्नचिह्न के साथ लिख लिया।

“मैं इसे नौ बार ले गई,” मारा ने कहा। “सोमवार को सिलाई वाला समूह मेरे लिए खोलता था। बुधवार को कोरस। शुक्रवार को शतरंज। ‘वर्कशॉप? यहाँ नहीं है।’ वर्कशॉप के नाम पर कोई दस्तख़त नहीं करता था।”
“थिएटर आँगन में रिहर्सल करता है,” आइरीन ने कहा। “वहाँ घंटी नहीं है।”

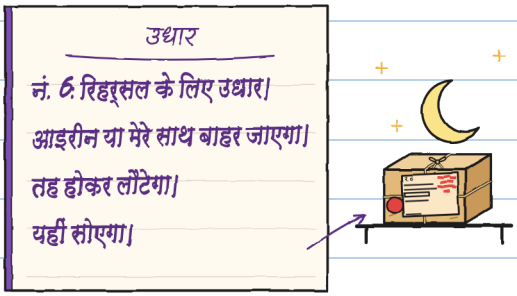
आइरीन ने फ़ाइल खोली और मारा को मुहर वाला एक काग़ज़ दिखाया।

“अब वर्कशॉप रजिस्टर में है: ‘थिएटर वर्कशॉप। प्रभारी: आइरीन।’ अब कोई दस्तख़त करता है।”



"अब जब दस्तख़त करने वाला कोई है, तो मारा इसे अपने डिब्बे में क्यों नहीं ले जाती?" जूलिता ने पूछा।
"मैं इसे अपने डिब्बे में नौ बार ले जा चुकी हूँ," मारा ने कहा। "अब शर्तें वह रखेगा जो इसे लेगा।"
"तह होने वाला छोटा थिएटर चौक-चौराहों पर ले जाने के लिए है," आइरीन ने कहा। "मेरे बच्चे इसे सड़क पर उठा सकें। न उठा सकें, तो यह मेरे काम का नहीं। और जो मेरे काम का नहीं, उस पर मैं दस्तख़त नहीं करती।"

"यह मैंने एक बेकरी में सुना था," मारा ने कहा। शर्तें डिलीवरी की किताब में लिख लीं। लेबल डिब्बे में रहेगा। डिब्बा मारा के पास।

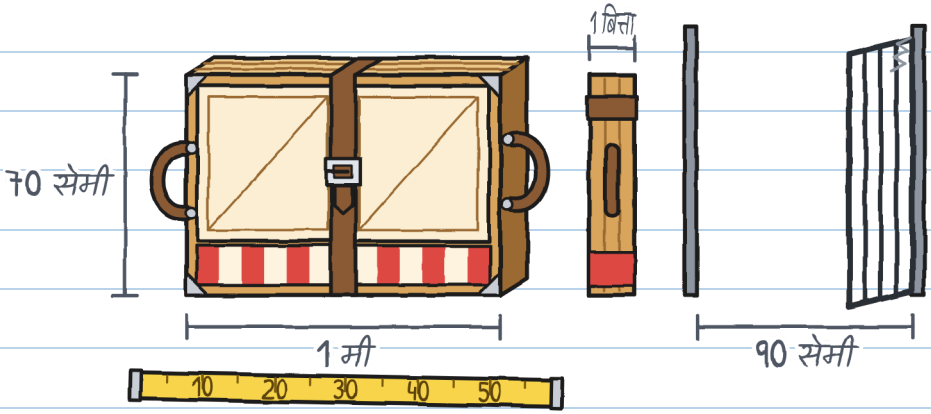


यह शेल्फ़ पर सोता है। सुबह लौटने की कोई जगह नहीं। यह अब भी नौ मुहरों पर है। मैंने पूछा था। –ज.

मंगलवार को हम कम्युनिटी सेंटर के आँगन में गए। फ़ुटपाथ से लोहे के फाटक से अंदर जाते हैं। वह अपने आप बंद हो जाता है।

मारा ने डिब्बा ज़मीन पर रखा और ढक्कन हटा दिया। छोटा थिएटर बाहर आया और बड़ा हो गया, एलिया के स्टैंड की तरह। मैं अब डरता नहीं। इंची टेप निकाल लेता हूँ।

नं. 6 की नाप

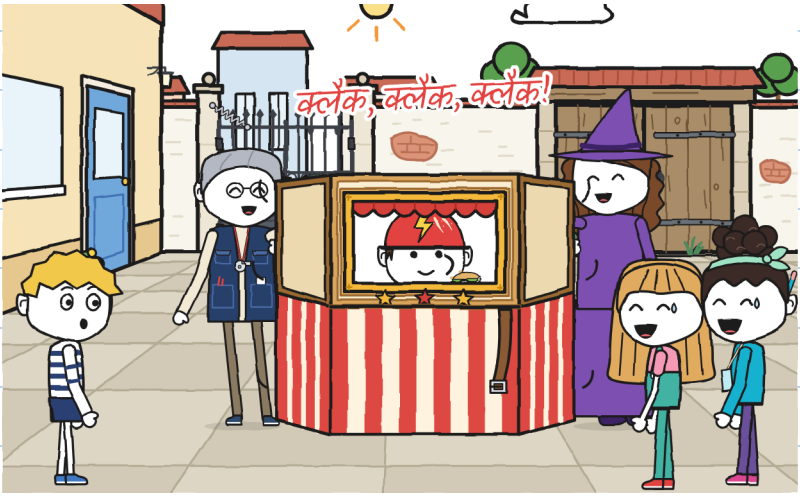


बग़ल के बल वह फाटक से निकल जाता था। यह आसान वाला हिस्सा था।

आइरीन ने देखना चाहा कि वह पूरा है या नहीं। उन्होंने पट्टा खोला और गठरी को घुमाया। पैनल अपने वज़न से अपने आप खुल गए: क्लैक, क्लैक, क्लैक। वह तीन दीवारों वाला एक मंच था, एक छोटा परदा और पीछे फ़्रेम वाली एक खिड़की।

खिड़की से टोन्यो दिखा। वह सैंडविच लिए गुज़र रहा था। उसका मुँह भरा था और वह नमस्ते नहीं कर पाया।

"पूरा है," आइरीन ने कहा। "वर्कशॉप का नियम: हाथ हत्थों पर। हिंज पर कभी नहीं। और हर मोड़ पर कोई पट्टा पकड़े रहे।"



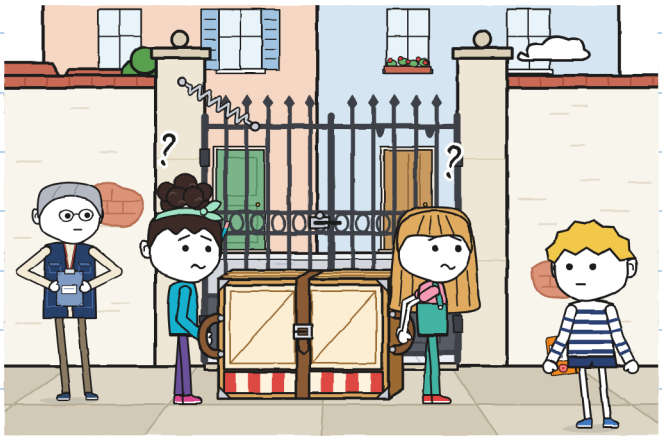
आइरीन और मारा ने उसे तह किया और पट्टा बाँध दिया।

"हम दोनों कोशिश करती हैं," जूलिता ने कहा। नोआ पहले से दूसरे हत्थे पर थी।

उन्होंने तीन तक गिना और उसे उठा लिया। उठ गया। उन्होंने आँगन का एक चक्कर लगाया। वे फाटक तक पहुँचीं। वह बंद था।

जूलिता ने उसे देखा। नोआ ने उसे देखा। उनके पास चार हाथ थे और चारों भरे हुए थे।

मैं दो मीटर दूर था, हाथ ख़ाली और एक डायरी लिए।



मैंने फाटक को अपनी पीठ से रोक लिया। वे निकल गईं। आइरीन ने फ़ाइल में कुछ लिखा।

उसी शाम मैंने इस डायरी की मशीन बनाई।

तीन का मीटर

हर हिस्से में कौन क्या करता है

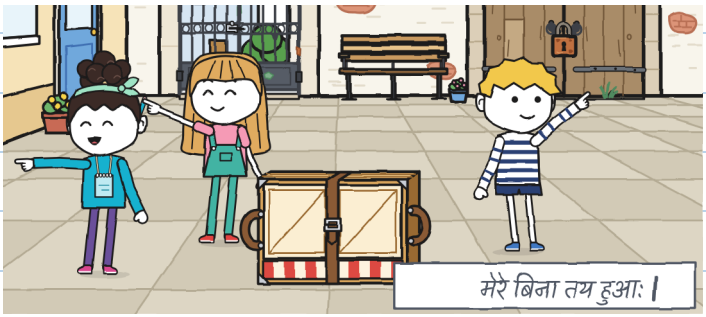
	उठाना 	दिशा बताना 	रास्ता खोलना 
आँगन, पहली कोशिश	जूलिता और नोआ	जूलिता और नोआ	
आँगन, दूसरी कोशिश	जूलिता और नोआ	जूलिता और नोआ	गुनी

दो नाम दोहराए गए और एक खाना ख़ाली: आगे नहीं बढ़ना है। तीनों खाने भरे हों, तो बढ़ सकते हैं।

और मैंने एक और बात लिखी, छोटी-सी: "फाटक को पत्थर भी रोक सकता है।"

लेबल समझना बाक़ी था।
"दो दरवाज़े मतलब फाटक के दोनों पल्ले," जूलिता ने कहा।
"दोनों खोलने पड़ेंगे," नोआ ने कहा।
"पहले हम चारदीवारी नाप सकते हैं," मैंने कहा।
हम तीनों ने इशारा किया: जूलिता ने फाटक की ओर; नोआ ने कमरे की ओर; मैंने सड़क की ओर।
"बाद में," दोनों ने कहा।

मैं अकेला गया। चारदीवारी के पीछे मुझे एक चीज़ मिली। जब लौटा, तो वे उस बात पर हँस रही थीं जो तब की थी जब मैं यहाँ नहीं था। मैंने मुँह खोला।
"तय हो चुका है, गुनी," जूलिता ने कहा। "दोनों पल्ले।"
मैंने मुँह बंद कर लिया। और डायरी भी।



वह लकीर मैंने दो दिन बाद देखी। वह मेरी ही थी। –ज.

अध्याय 2

रास्ता किसे पता है?

बुधवार को पहला सफ़र था: दुकान से आँगन तक, सड़क के रास्ते। जब मैं पहुँचा, तो मीटर पूरा भरा हुआ था। हरे रंग में।

"तुम और नोआ उठाओगे," जूलिता ने कहा। "मैं दिशा बताऊँगी: मुझे रास्ता पता है। और मैं आगे चलूँगी, तो रास्ता भी खोलूँगी।"
"हमने रास्ते में सोच लिया था," नोआ ने कहा।

हरे रंग में मिटता नहीं। दूसरी लकीर।

तीन का मीटर

	उठाना 	दिशा बताना 	रास्ता खोलना 
आँगन, पहली कोशिश	जूलिता और नोआ	जूलिता और नोआ	
आँगन, दूसरी कोशिश	जूलिता और नोआ	जूलिता और नोआ	गुनी
दुकान → आँगन	गुनी और नोआ	जूलिता	जूलिता



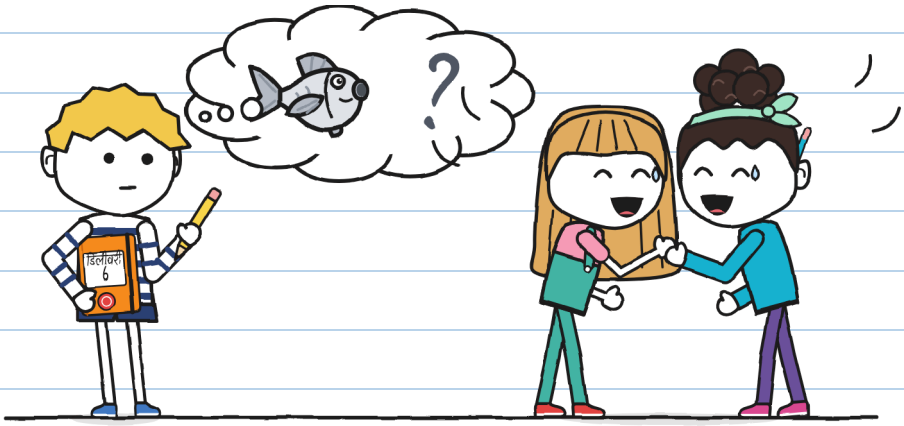
मेरे बिना तय हुआ: ||

“निकलने से पहले क्या हम नक़्शा बनाएँ?” मैंने कहा।
“मोड़ों पर नंबर डालकर।”
“नक़्शे की ज़रूरत नहीं,” जूलिता ने कहा। “लंगड़ी मछली तक सीधा रास्ता है।”

नोआ हँसने लगी। जूलिता भी।

“कौन-सी मछली?”
“लंगड़ी मछली लंगड़ी मछली है,” नोआ ने कहा।
“यह लंबी कहानी है,” जूलिता ने कहा।
“और बहुत अच्छी,” नोआ ने कहा।

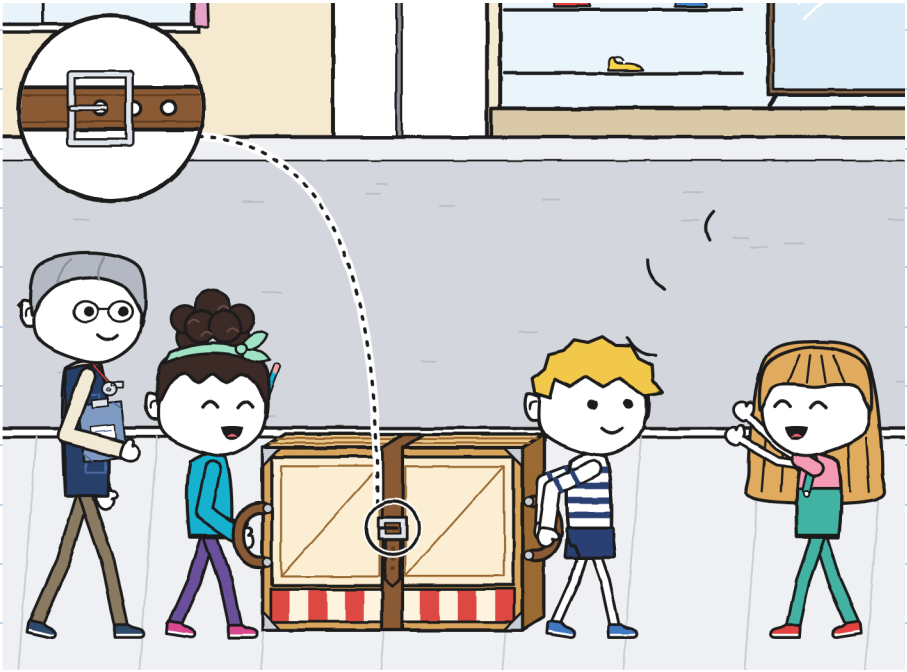
उन्होंने मुझे नहीं सुनाई। तीसरी लकीर।



मारा ने दुकान के दरवाज़े पर डिब्बे से छोटा थिएटर निकाला। नोआ ने पट्टा पहले छेद में बाँधा।

"इस तरह आँगन में वह जल्दी खुल जाएगा।"

मैं आगे था और नोआ पीछे। आगे से सड़क दिखती है। पीछे से सिर्फ़ छोटा थिएटर दिखता है। आइरीन सबसे पीछे थीं, फ़ाइल और सीटी के साथ। वे रास्ता नहीं बता रही थीं। हर कर्ब पर वे "रुको" कहती थीं।

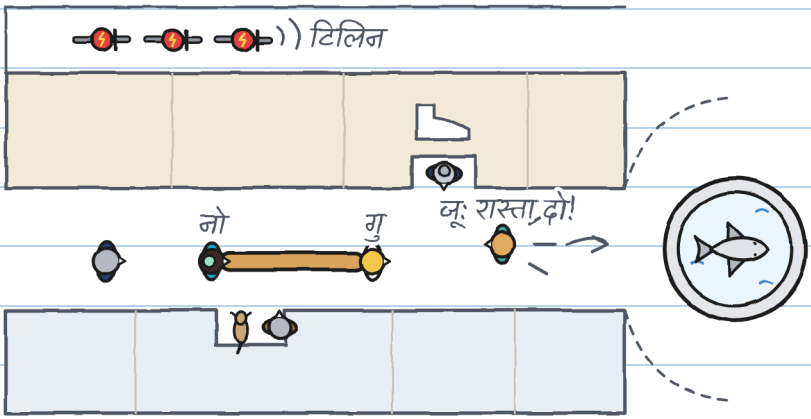


जूलिता बहुत अच्छे से रास्ता खोल रही थी।

"रास्ता दो, थिएटर आ रहा है!"

जूते वाली आंटी देखने दरवाज़े पर आ गई। एक आदमी अपने कुत्ते के साथ एक गेट पर रुक गया। दूर, मोहल्ले के उस पार, एक घंटी बजी। टिलिन।

"'बिजली' अपनी दौड़ का अभ्यास कर रही है," नोआ ने कहा। "वे साइकिल पर हैं, एक लिफ़ाफ़े के साथ। हम पैदल, इसके साथ।"
"इसके साथ दौड़ते नहीं," आइरीन ने कहा।

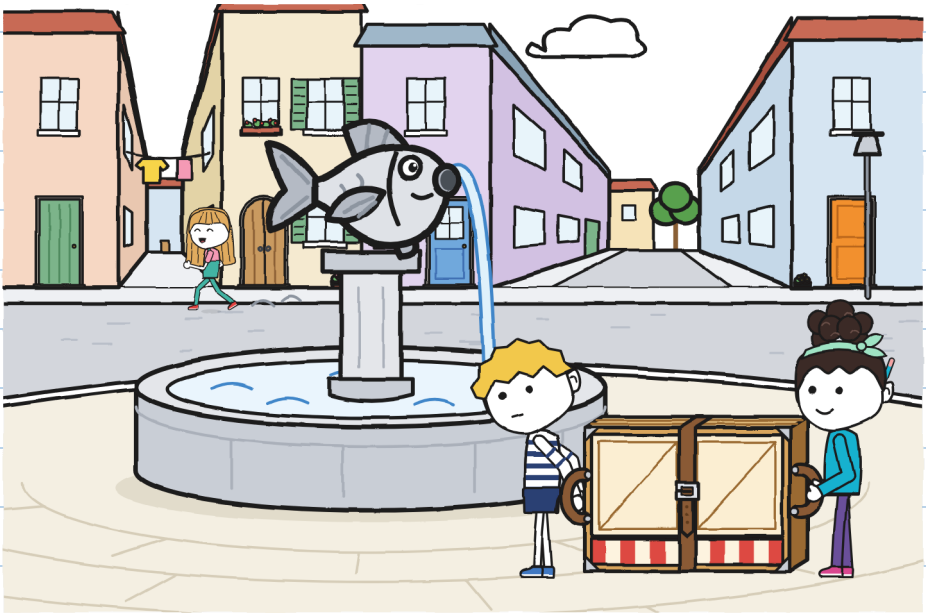


हम फ़व्वारे वाले चौक पर पहुँचे। जूलिता मुड़ी और इशारा चिल्लाकर बोली। फिर फाटक पकड़ने के लिए केंद्र की ओर दौड़ गई।

"लंगड़ी मछली तक और मुड़ जाना!"

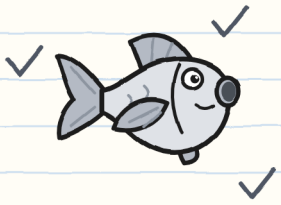
और वह जा चुकी थी।

फ़व्वारे के बीच में पत्थर की एक मछली है। मैंने उसे ध्यान से देखा। मेरी तरफ़ से उसके सारे पंख थे।

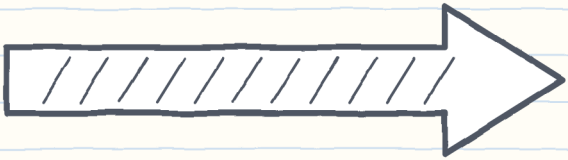


मैंने जल्दी सोचा। यह मेरे बस की बात नहीं।

फ़व्वारे की मछली: सारे पंख दिख रहे हैं।
यह लंगड़ी नहीं है।
कोई और मछली होगी।



मुड़ना: किस तरफ़?
बाएँ, तंग गली।
दाएँ, चौड़ी गली।
छोटा थिएटर चौड़ी जगह से बेहतर जाता है।

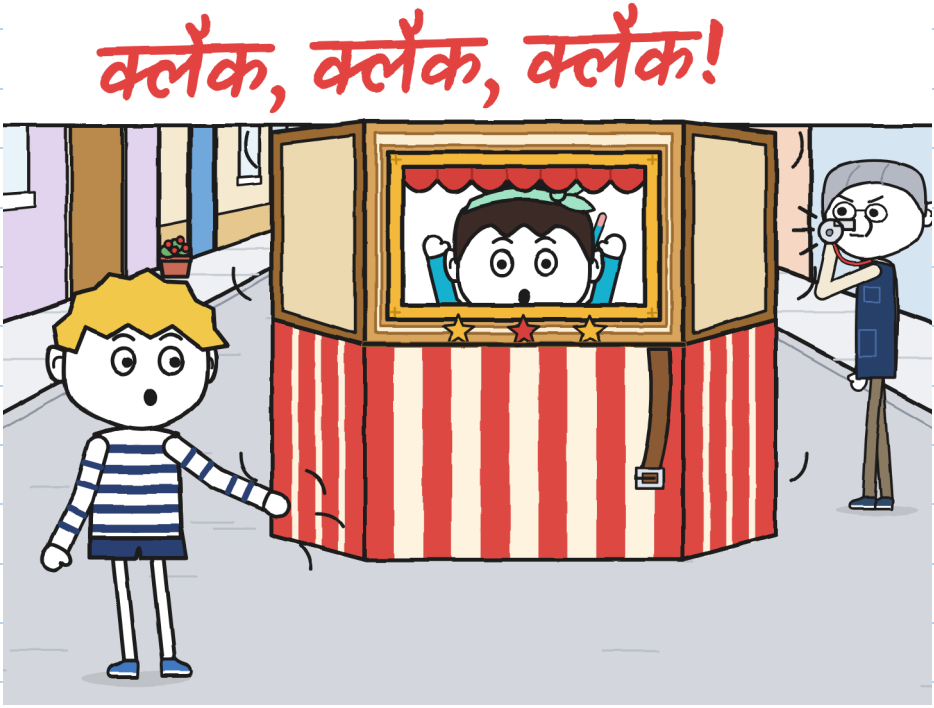


"अभी मुड़ूँ?" मैंने पीछे की ओर पूछा।
"लंगड़ी मछली पर!" नोआ ने छोटे थिएटर के पीछे से कहा।

मैं दूसरी मछली ढूँढता रहा। कोई नहीं थी। मैं दाएँ मुड़ गया।

किसी ने "मोड़" नहीं कहा। किसी ने पट्टा नहीं पकड़ा। पहले छेद का बकल ज़्यादा नहीं टिकता।
क्लैंक। क्लैंक। क्लैंक।

पैनल धीरे-धीरे, एक के बाद एक, नोआ के चारों ओर खुल गए। आइरीन ने सीटी बजाई। फिर सड़क के बीच एक थिएटर था। और उसके अंदर, नोआ।
"हैलो," उसने खिड़की से कहा।

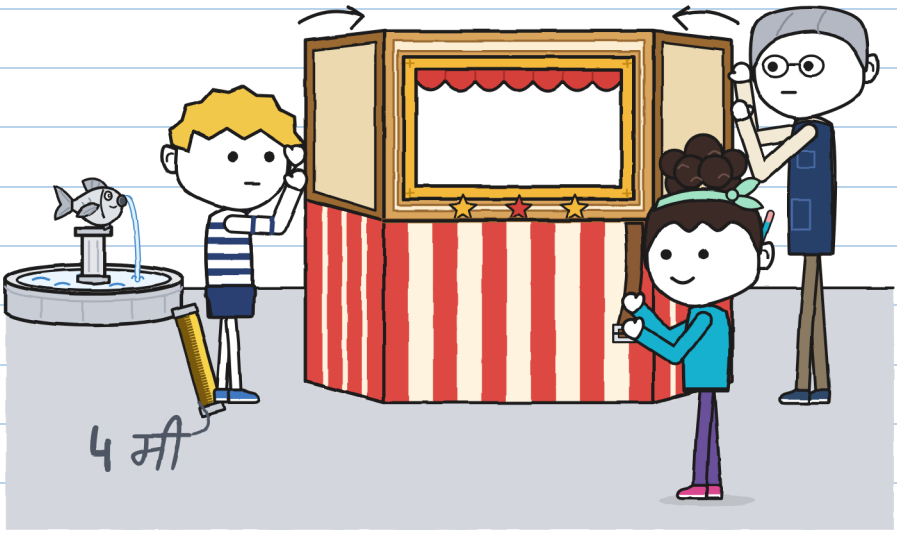


आइरीन ने नोआ के हाथ देखे। फिर मेरे। सब पूरे थे। पैनल हल्के हैं और धीरे खुलते हैं।

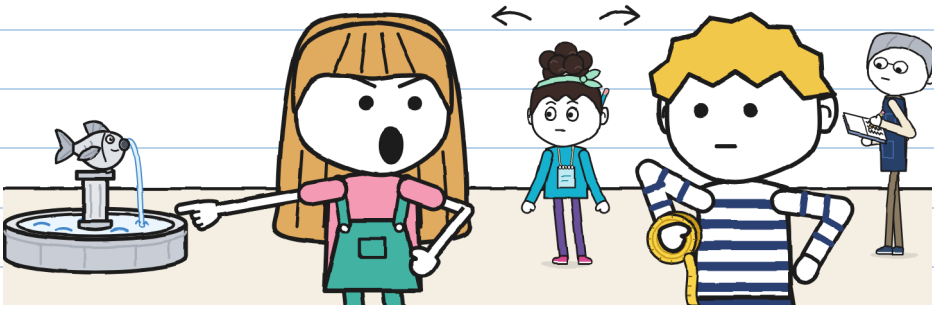
"दिशा कौन बता रहा था?" उन्होंने पूछा।

किसी ने जवाब नहीं दिया। दिशा जूलिता बता रही थी। वह दो गलियाँ आगे एक फाटक पकड़े थी।

आइरीन और मैंने हाथ लकड़ी की बग़ल की पट्टियों पर रखकर छोटे थिएटर को तह किया। मैंने नापा: मेरे पैर से फ़व्वारे तक चार मीटर।



जूलिता दौड़ती हुई लौटी।
“पर वह तो लंगड़ी मछली पर था!”
“कौन-सी लंगड़ी मछली?”
“वह! बाईं ओर। हमेशा की तरह।”
“‘हमेशा’ उस समय की बात है जब मैं नहीं था।”
जूलिता आइरीन की ओर मुड़ी।
“दरअसल गुनी खो गया था।”
मैं खोया नहीं था। मुझे पता था कि मैं कहाँ हूँ: फ़व्वारे से चार मीटर दूर। मैंने अभी-अभी नापा था।
यह भी उन्होंने मेरे बिना तय कर लिया। चौथी लकीर।



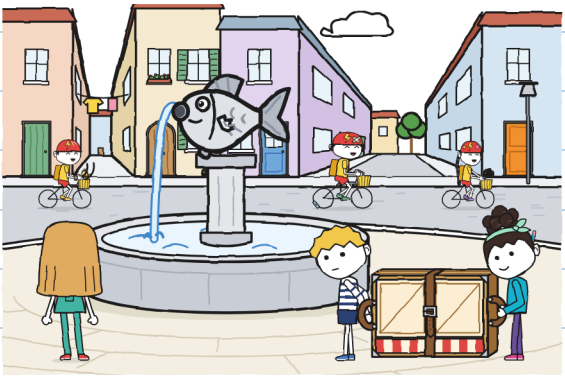
मैंने यह ज़ोर से और लोगों के सामने कहा। मुझे पता है। –ज.

उन्होंने मुझे मछली का दूसरा पहलू दिखाया। उसका एक पंख नहीं है, बाईं ओर वाला। इसे देखने के लिए पता होना चाहिए कि वह नहीं है।

हमने मोड़ दोहराया। पहली बार मैंने "मोड़" बहुत जल्दी कह दिया। दूसरी बार, बहुत देर से। तीसरी बार ठीक रहा, पर कोई बोल नहीं रहा था।

तभी "बिजली" सड़क से गुज़रीः ज़ोई, ब्रूनो और टोन्यो, एक क़तार में, हाथ हैंडल पर। कोने पर टिलिन। उन्होंने बिना ब्रेक लगाए और बिना एक-दूसरे को छुए फ़व्वारे का चक्कर लगा लिया।

"स्टेशन एक, पहली बार में," टोन्यो ने गुज़रते हुए कहा।



हम लगभग रात होने पर आँगन पहुँचे। मारा ने छोटे थिएटर को अपने डिब्बे में रखा और उसे दुकान ले गईं।

मैंने आज की बात मीटर में लिख ली। तीनों खानों में नाम थे। और हमारे सामने सड़क पर थिएटर खुल गया। मीटर में कुछ कम था। क्या, मुझे नहीं पता था।

तीन का मीटर

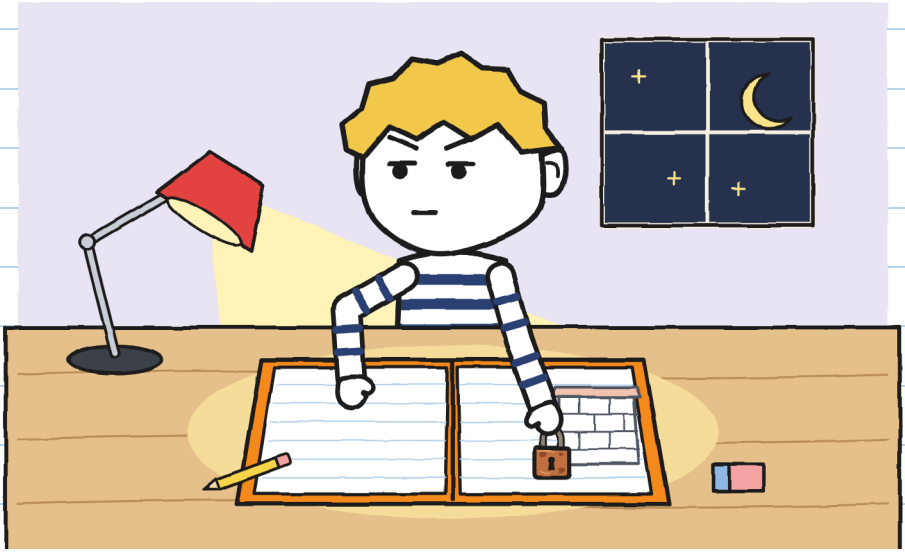
	उठाना 	दिशा बताना 	रास्ता खोलना 	
दुकान → आँगन	मुनी और नोआ	जूलिता	जूलिता	
दुकान → फ़व्वारा	मुनी और नोआ	जूलिता	जूलिता	खुल गया · 3 बार दोहराया

उस पंक्ति में मेरा नाम दो बार आता है। और मैं दोनों में नहीं थी। –ज.

घर पर मैंने आख़िरी पन्ने पर वह बनाया जो मुझे मंगलवार को चारदीवारी के पीछे मिला था। मैंने उसे हाथ से ढक लिया, हालाँकि मैं अकेला था।

मैंने सोचा: "कल वे फिर ग़लत करेंगे। तब मैं इसे निकालूँगा।"

मुझे यह अच्छा प्लान लगा। उसका तो वक़्त भी तय था।



यह पन्ना मैंने गुरुवार को पढ़ा। मुझे पसंद नहीं आया। बुधवार वाला मेरा पन्ना भी नहीं। –ज.

अध्याय 3

क्या गुनी का नक़्शा काम का है?

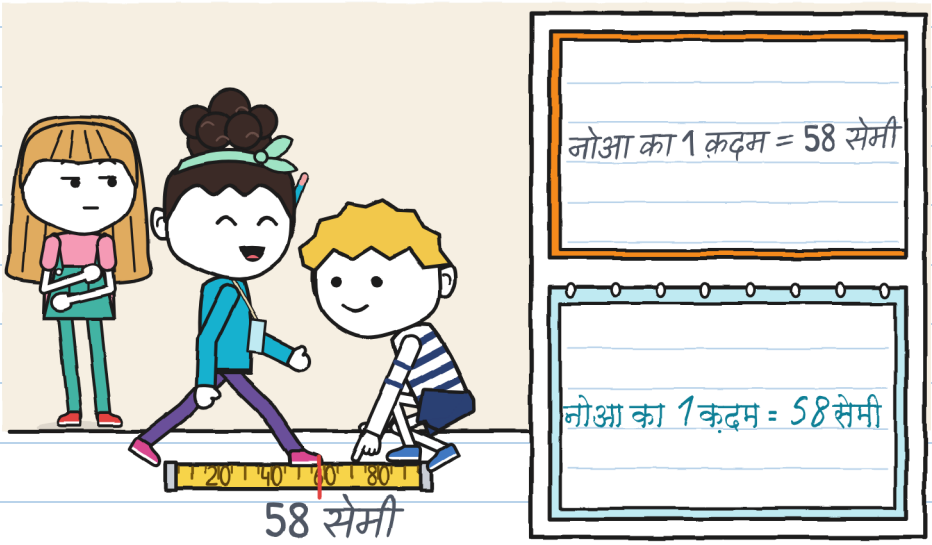
उस रात मैंने पूरा नक़्शा बनाया। ऊपर से दिखता आँगन, नापी हुई चारदीवारी, फाटक, फ़व्वारा, तीनों हिस्से। और उसके पीछे, मंगलवार वाली बात।

मेरा नक़्शा बहुत अच्छा बना। मैंने उसे चार तह करके डायरी में रख लिया।



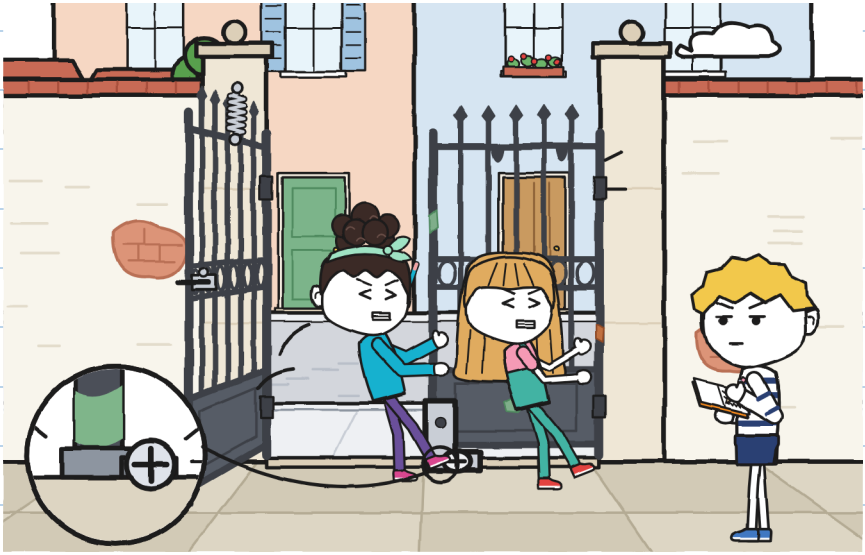
गुरुवार को दुकान में नोआ क़दम गिन रही थी।
"दरवाज़े से कर्ब तक, छह क़दम। कर्ब से बत्ती तक, ग्यारह।"
"यह तो टेप से नापा जाता है," मैंने कहा।
"मैं क़दमों से नापती हूँ। वे मेरे साथ हमेशा रहते हैं।"

मैंने नोआ का एक क़दम नापा: अट्ठावन सेंटीमीटर। उसने उसे अपनी नोटबुक में लिखा। मैंने अपनी डायरी में। जूलिता हमें देख रही थी। हम एक ही वक़्त वाली दो घड़ियाँ थे।
मैंने सोचा था कि नोआ एक और जूलिता होगी। वह नहीं है।
नोआ गिनती है।



हम आइरीन के साथ आँगन गए। जूलिता और नोआ अपना आइडिया आज़माना चाहती थीं: फाटक के दोनों पल्ले खोलना।
पहला पल्ला अपने आप खुलता और बंद होता है। दूसरा नहीं खुला। वह पेंट से चिपका है और एक पेंच से ज़मीन में जड़ा है।

"तो फिर लेबल ग़लत है," जूलिता ने कहा।
"पक्का," नोआ ने कहा।
उन्होंने दो सेकंड में तय कर लिया। मैंने लकीर के लिए पेंसिल निकाली। यह पाँचवीं थी।



मैंने नहीं खींची।

मैंने लकीरों की क़तार देखी। एक कम थी, मेरी। मंगलवार को चारदीवारी के पीछे मैंने किसी से पूछे बिना कुछ तय किया था। मैंने चुप रहना तय किया था।

मेरे बिना तय हुआः||||

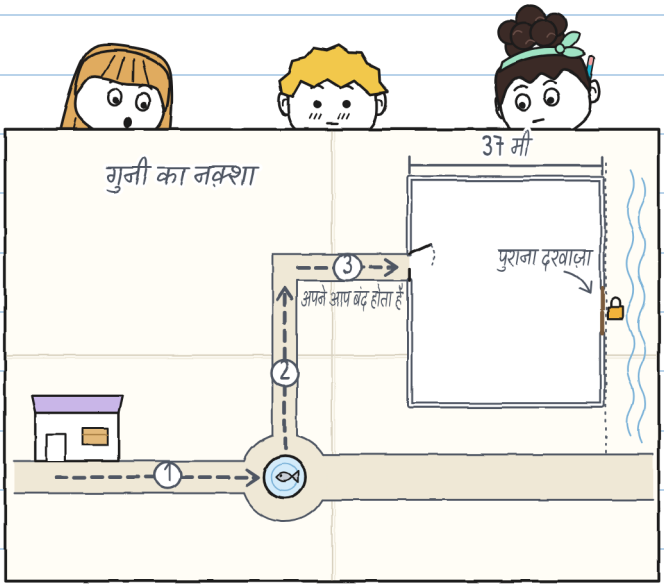
उनके बिना तय हुआः|



“लेबल ग़लत नहीं है,” मैंने कहा। मैंने इसे जितना चाहा था उससे ज़्यादा ऊँची आवाज़ में कहा। “आँगन का एक और दरवाज़ा है। पीछे, नहर वाली गली में। पुराना है और उस पर ताला है। मुझे मंगलवार को मिला था।”

मैंने नक़्शा निकाला और छोटे थिएटर के ऊपर खोल दिया।

“मंगलवार को?” जूलिता ने कहा।
“मंगलवार को। मैंने इसे बाद में सही साबित होने के लिए रख लिया था।”



थोड़ी देर किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने नापा: वह लंबी थी।
"ठीक है," नोआ ने कहा। और उसने दरवाज़ा अपने नक़्शे में उतार लिया।
जूलिता ने "ठीक है" नहीं कहा। वह एक पैर हिला रही थी।
"कल हमें इसकी बहुत ज़रूरत थी।"
"हाँ।"

आँगन में छिपने की कोई जगह नहीं है। मैंने ढूँढी भी नहीं। मैं नक़्शा खोले खड़ा रहा।

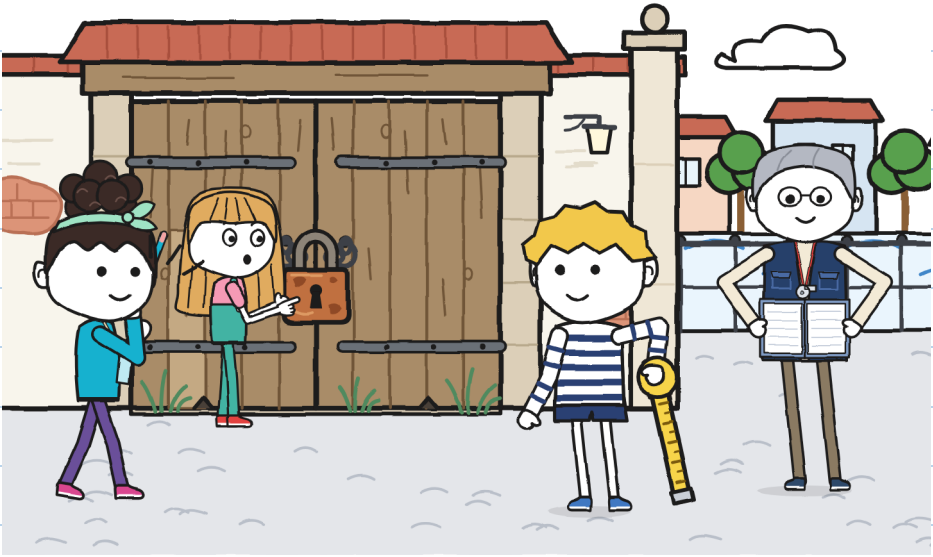


मैंने "ठीक है" इसलिए नहीं कहा कि अभी वह सच नहीं था। –ज.

हम आइरीन के साथ दरवाज़ा देखने गए। नोआ ने चारदीवारी गिनी: चौंसठ क़दम। मैंने उसे पहले नापा था: सैंतीस मीटर। दोनों एक ही निकलीं।

पुराना दरवाज़ा लकड़ी का है, दो पल्लों वाला, किसी दानव के बिस्तर जितना चौड़ा। ताले पर ताले से ज़्यादा ज़ंग है।

"यह सालों से बंद है," आइरीन ने कहा। "मैंने इसे हमेशा ऐसा ही देखा है।"



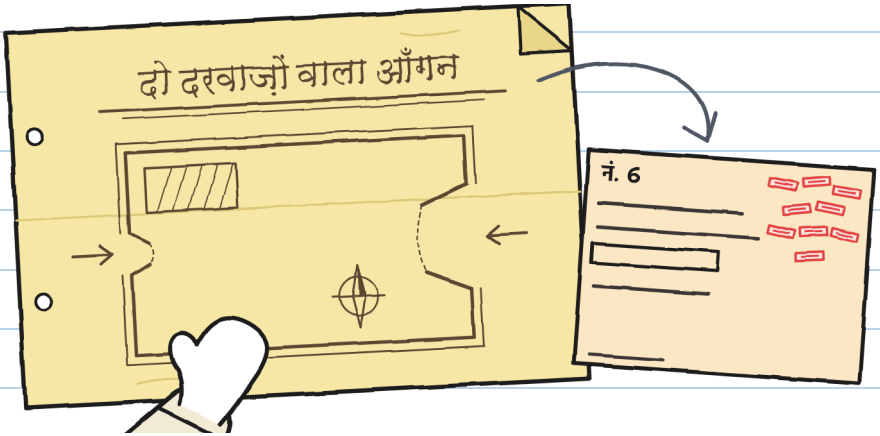
आइरीन ने केंद्र के रजिस्टर में खोजा। उन्हें एक पीला पन्ना मिला।

"यह रहा। जब यह दरवाज़ा इस्तेमाल होता था, तो दो जगह से घुसते थे: फाटक से या यहाँ से। आँगन को 'दो दरवाज़ों वाला' कहते थे। और सारे समूहों में से सिर्फ़ थिएटर आँगन में रिहर्सल करता है।"

"तो लेबल कोई पहेली नहीं है," नोआ ने कहा।

"यह एक पता है," मैंने कहा।

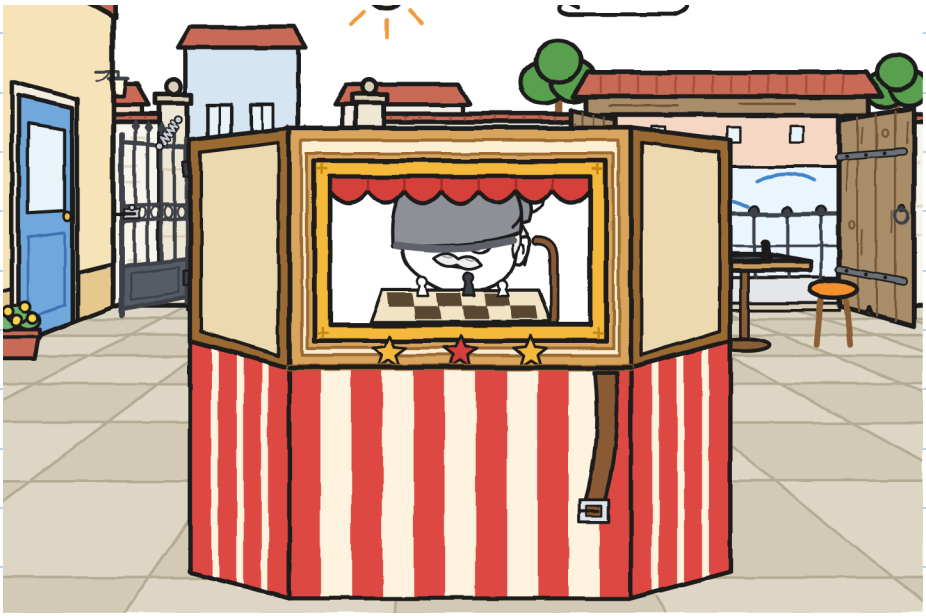
"आँगन की वर्कशॉप। दोनों दरवाज़ों से प्रवेश।" यह ठीक लिखा था। बस पुराना था।



मारा ने बाद में बताया कि उन्होंने वह ताला नौ बार देखा था। उन्होंने सोचा कि बंद दरवाज़ा गिनती में नहीं आता। –ज.

चाबी फ़ाइल में एक लिफ़ाफ़े में थी: "पुराना दरवाज़ा। खोना मत।" आइरीन ने ताला खोला। दरवाज़े से जहाज़ जैसी आवाज़ आई।

आँगन में शतरंज वालों की मेज़ें धूप में थीं। आइरीन ने छोटा थिएटर बीच में खोला। वे देखना चाहती थीं कि वह दोनों दरवाज़ों के बीच कितनी जगह छोड़ता है। काफ़ी से ज़्यादा। छोटे थिएटर की खिड़की से एंटोनियो अंकल दिखे, टोपी आँखों पर। वे कोई चाल सोच रहे थे। थोड़े खर्राटे भी ले रहे थे।



“शनिवार को मैं दोनों खोलती हूँ,” आइरीन ने कहा। “साइकिलें पुराने दरवाज़े से आएँगी, गली से। जो सामान उठाकर पैदल आएँगे, वे फाटक से। इस तरह वे आपस में नहीं टकराएँगे।”

“पर पुराना वाला ज़्यादा चौड़ा है,” जूलिता ने कहा। “और अपने आप बंद नहीं होता।”

“फाटक तुम्हारा है। अगर वर्कशॉप छोटे थिएटर को किसी चौक में ले जाए, तो वहाँ इससे बुरे दरवाज़े हैं।”

जूलिता ने मुँह खोला। उसने नोआ को देखा। मुझे देखा। “तुम क्या कहते हो?”

पूरे हफ़्ते में यह पहली बार था। मैंने उसे तारीख़ के साथ लिख लिया।

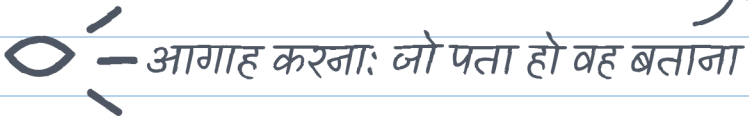


मैंने कहा फाटक, पर अभ्यास के साथ। नोआ ने भी वही। जूलिता ने कहा ठीक है। इस बार वह आधा सच था।

फिर हमने मीटर ठीक किया। उसके तीन खाने बुधवार की बात के या मेरी बात के काम के नहीं थे।

तीन का मीटर (चार के साथ)

	उठाना 	दिशा बताना 	रास्ता खोलना 	आगाह करना 
आँगन, दूसरी कोशिश	जूलिता और नोआ	जूलिता और नोआ	गुनी	गुनी नहीं
दुकान → फ़व्वारा	गुनी और नोआ	जूलिता	जूलिता	कोई नहीं

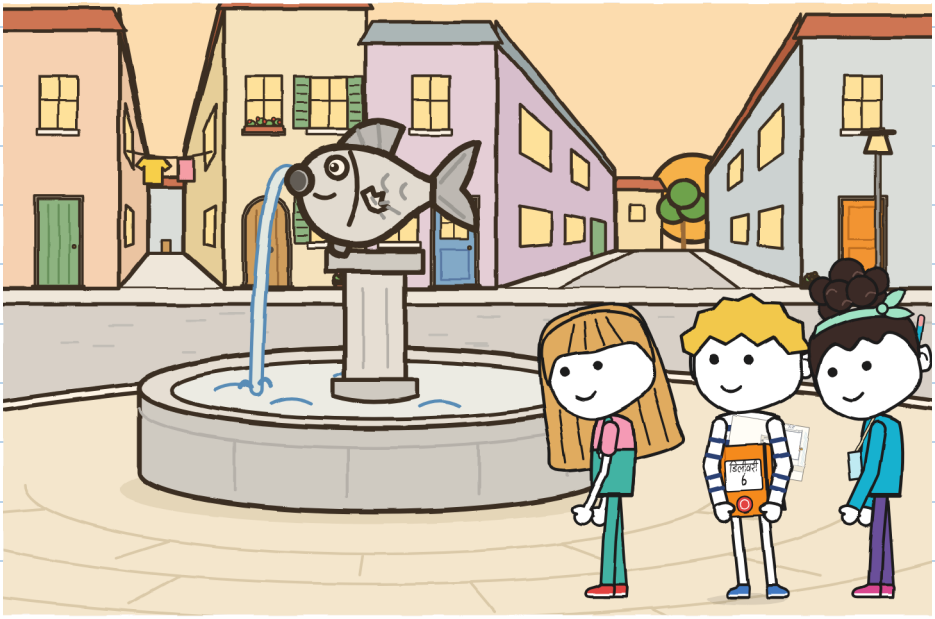


तीन के मीटर में चार खाने हैं। मैं शिकायत नहीं करती। चौथा सबसे मुश्किल लगता है। –ज.

हम फ़व्वारे से होकर लौटे। मैं मछली के सामने रुका, उसकी लंगड़ी तरफ़ से।

"तुम दोनों मुझे कहानी सुनाओगी?"
"यह लंबी है," जूलिता ने कहा।
"शनिवार को," नोआ ने कहा। "अगर हम पहुँचे तो।"

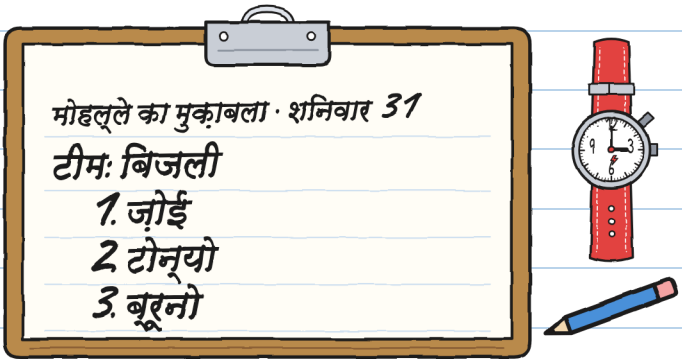
यह "ना" नहीं थी। मैंने नक़्शा डायरी में रख लिया, इस बार बिना तह किए। आधा नक़्शा बाहर झाँक रहा था।



अध्याय ५

क्या कोई भी राह दिखा सकता है?

शुक्रवार को टोन्यो दुकान आया। वह घड़ी, एक पेंसिल और "बिजली" का फ़ॉर्म लाया था।



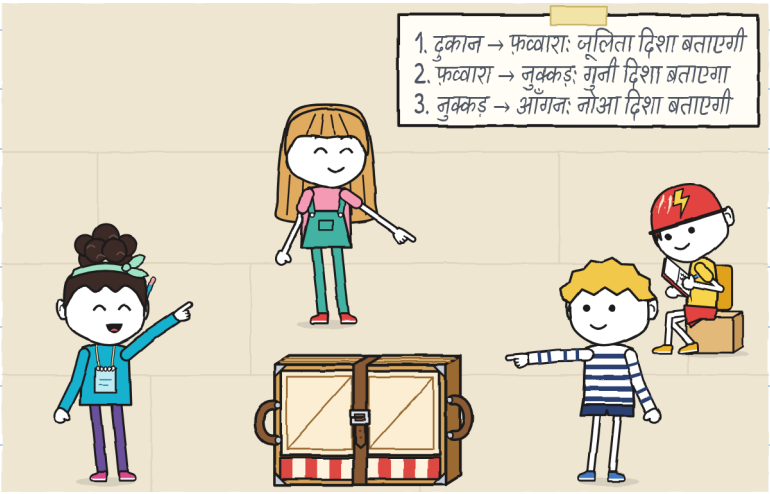
"इसे ज़ोई ने लिखा," उसने कहा। "ब्रूनो ने उसे अपना नाम बताया: 'ब्रूनो, ब से।'"
"और ज़ोई?"
"उसने ब्रूनो लिखा। ब से।"

टोन्यो अपने डिब्बे पर बैठ गया और घड़ी शून्य पर कर दी।
"आज मैं समय नापता हूँ। राय नहीं देता। लिखता हूँ कि क्या दोहराना पड़ा।"

नोआ का आइडिया: बारी-बारी। तीन हिस्से, और हर हिस्से में कोई अलग दिशा बताए। मेरा आइडिया: जो उठा नहीं रहा, वह दिशा बताए और रास्ता खोले। बाक़ी दो को सिर्फ़ छोटा थिएटर दिखता है। जूलिता का आइडिया: अभी शुरू करो।

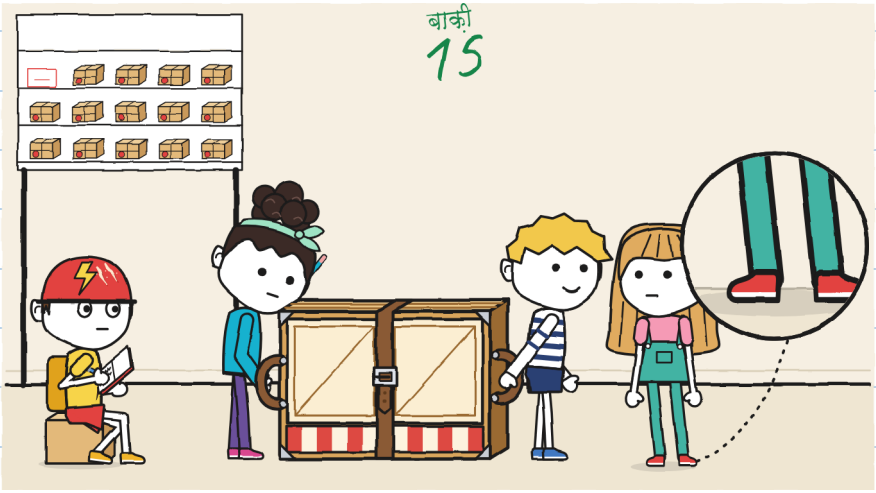
"पहले हिस्से में दिशा कौन बताएगा?"
हम तीनों ने एक साथ इशारा किया। हर किसी ने किसी और की ओर इशारा किया।

टोन्यो ने उसे लिख लिया। आइरीन दरवाज़े पर फ़ाइल लिए इंतज़ार कर रही थीं। वे भी राय नहीं दे रही थीं।



छोटे थिएटर को उठाने से पहले जूलिता ने कहा:
"एक बात। बुधवार को मैंने एक ऐसा निर्देश दिया जो सिर्फ़ नोआ समझती थी। और फिर कहा: 'गुनी खो गया है।'"
उसने और कुछ नहीं कहा। ज़रूरत नहीं थी: सब आ गया था।

"ठीक है," मैंने कहा। यह मैंने नोआ से सीखा।
"मछली का पंख किस तरफ़ से नहीं है?" मैंने पूछा।
"बाईं तरफ़ से, जैसे तुम आते हो। फ़व्वारे पर, बाएँ मोड़। मैं पाँच क़दम पहले बता दूँगी।"
"यह हुआ निर्देश।"



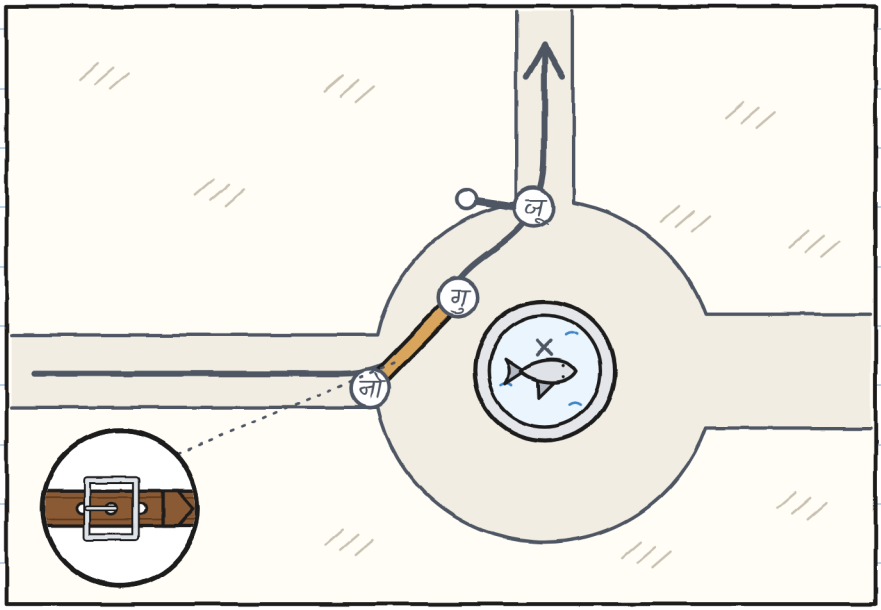
दोनों पैर स्थिर। चित्र में देख लो। –ज.

पहला हिस्सा। नोआ ने पट्टा दूसरे छेद में बाँधा।

“पाँच क़दम... बाएँ मोड़!”
“पट्टा!” नोआ ने कहा। और उसे पकड़ लिया।

हम लंगड़ी मछली के चारों ओर घूमे। ऐसा लगा जैसे हम हमेशा से यही करते आए हों। कोई क्लैंक नहीं।

“पहला हिस्सा: छह मिनट,” टोन्यो ने कहा। “दोहराया: कुछ नहीं।”

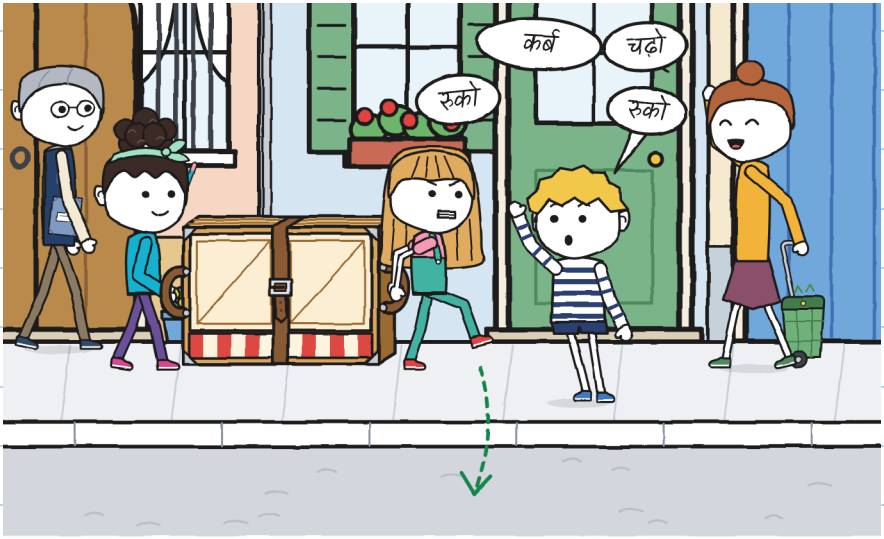


दूसरा हिस्सा, फ़व्वारे से नुक्कड़ तक। जूलिता और नोआ उठा रही थीं। दिशा मैं बता रहा था।

मैं ऐसे दिशा बताता हूँ:

"तीन क़दम। रुको। कर्ब। चढ़ो। दो क़दम। रुको। एक महिला। नमस्ते। महिला निकल गईं। चार क़दम।"

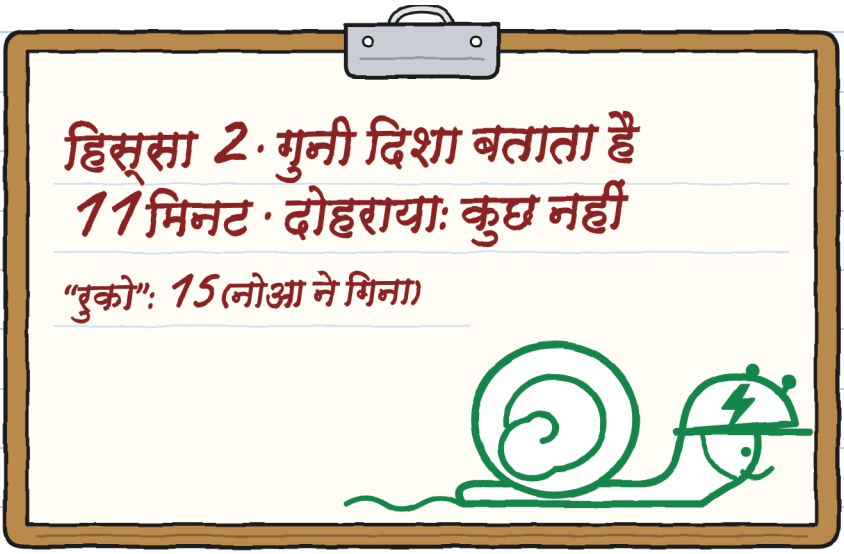
जूलिता अपने हत्थे के साथ आगे चल रही थी, चुप। उसका पैर छोटे रास्ते की ओर जाता था। वह उसे मेरे रास्ते पर लौटा लेती थी।



"दूसरा हिस्सा: ग्यारह मिनट," टोन्यो ने कहा। "इससे धीमा मैंने कभी नहीं नापा। दोहराया: कुछ नहीं।"

मैंने पहली बार कुछ चलाया। और कुछ दोहराना नहीं पड़ा।

"तुमने 'रुको' चौदह बार कहा," जूलिता ने कहा।
"मैंने गिना। पंद्रह," नोआ ने कहा।
"छह ज़्यादा थे," जूलिता ने कहा। "पर मैं हर बार रुकी।"



मैंने किसी पर बहस नहीं की। दाँत भींचते-भींचते दुखने लगे थे। –ज.

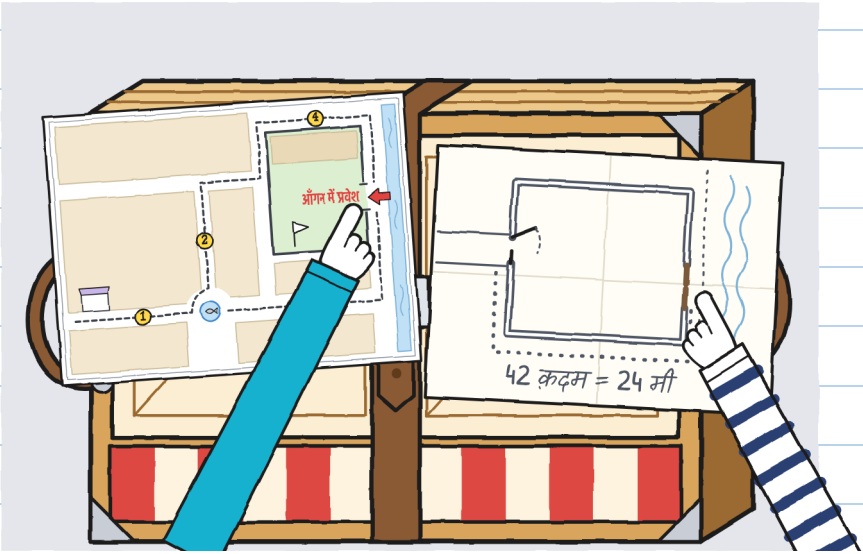
तीसरा हिस्सा, नुक्कड़ से आँगन तक। जूलिता और मैं उठा रहे थे। नोआ दिशा बता रही थी, मुक़ाबले के नक़्शे के साथ। आइरीन ने हर टीम को एक दिया था।

नोआ बीस क़दम पर रुक गई, जहाँ नहर वाली गली शुरू होती है।
"यह नहीं बैठता।"
"क्या नहीं बैठता?"
"नक़्शा हमें यहाँ भेजता है, पुराने दरवाज़े तक। हम फाटक से जाते हैं, दूसरी तरफ़।"



हमने छोटे थिएटर को ज़मीन पर रख दिया। पहले रखा जाता है; फिर बहस होती है।
मैंने अपना नक़्शा उसके नक़्शे के पास रखा। नक़्शे में सिर्फ़ एक प्रवेश बना था। वह फाटक नहीं था। वह पुराना दरवाज़ा था।
"यह पुराना नक़्शा है," मैंने कहा। "उस ज़माने का जब वहीं से जाते थे।"

वहाँ से फाटक तक नोआ के बयालीस क़दम थे। या मेरे चौबीस मीटर। उसके क़दमों और मेरे टेप से हमने पूरा मोहल्ला नापा।



“आइरीन को बता दें?” जूलिता ने पूछा।
“और बाक़ी टीमों को भी,” नोआ ने कहा। “वरना पैदल वाले गली से अंदर जाएँगे। साइकिलों के साथ।”
मैंने कुछ नहीं कहा। मैं सहमत था।

आइरीन ने नक़्शे एक-एक करके लाल मार्कर से ठीक किए। टोन्यो ने अपना देखा।
“‘बिजली’ नक़्शे वाले रास्ते से अंदर जाने वाली थी।”
“तुम लोग वहीं से अंदर जाओगे,” आइरीन ने कहा।
“साइकिलों के लिए नक़्शा सही था। इत्तफ़ाक़ से।”



हम नुक्कड़ तक लौटे और तीसरा हिस्सा दोबारा किया, अब फाटक तक। जूलिता और मैं उठा रहे थे। नोआ दिशा बता रही थी, रास्ता खोल रही थी और आगाह कर रही थी। सब एक साथ:

"रुको! मैं पल्ला पकड़ती हूँ! निकलो!"

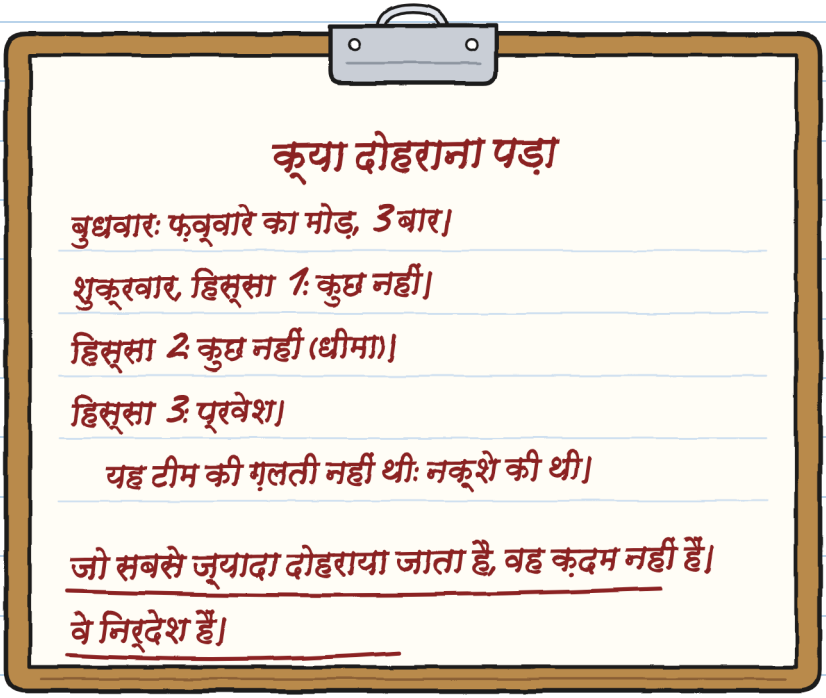
हम निकल गए। मैंने मीटर भर दिया।

	उठाना 	दिशा बताना 	रास्ता खोलना 	आगाह करना 
नुक्कड़ → आँगन	गुनी और जूलिता	नोआ	नोआ	नोआ: "नक़्शा ग़लत है"

यह पहली क़तार थी जिसके सारे खाने भरे थे। चौथा, आगाह करने वाला, नोआ ने भरा था।

फाटक भारी है। नोआ ने उसे पीठ से रोका, जैसे तुमने मंगलवार को। यह मैं लिखती हूँ। तुम नहीं लिखते। –ज.

टोन्यो ने हमें अपना पन्ना दिखाया।



"यह आख़िरी बात एक राय है," जूलिता ने कहा।
"यह एक तथ्य है," टोन्यो ने कहा। "'बिजली' में ग़लत बताया गया पता दो बार महँगा पड़ता है: जाते समय और लौटते समय।"

टोन्यो ने हेलमेट पहना और अभ्यास करने चला गया। टिलिन।

रात को दुकान में मारा ने छोटा थिएटर अपने डिब्बे में रखा। नोआ ने बकल देखा।

"कल, तीसरे छेद में। इसे खोलना मुश्किल है, पर ठीक है।"

मैंने डायरी लकीरों वाले कोने से खोली। आज मैंने कोई नहीं बनाई। मैंने चार असहमतियाँ गिनीं। सब ज़ोर से कहीं। एक जीती।

मेरे बिना तय हुआ: ||||

उनके बिना तय हुआ: |

शुक्रवार।

असहमतियाँ: ५।

कही गईं: ५।

जीती गईं: १।

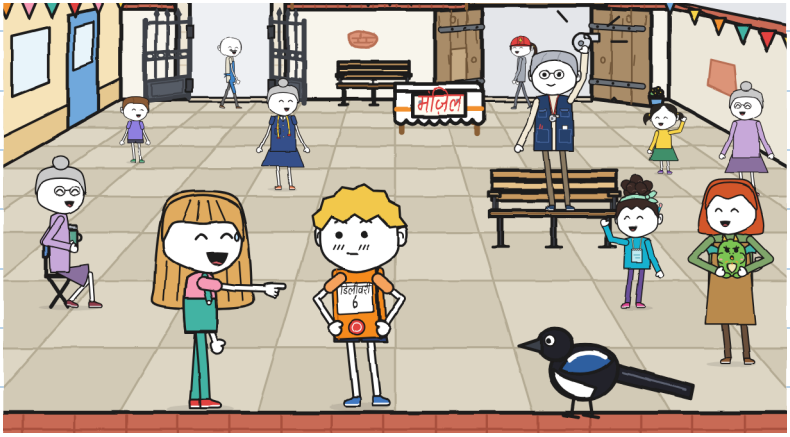


जो तुमने जीती, वह थी छोटे थिएटर को बहस से पहले ज़मीन पर रखने वाली। वह मैं तुम्हें तोहफ़े में देती हूँ। –ज.

अध्याय 5

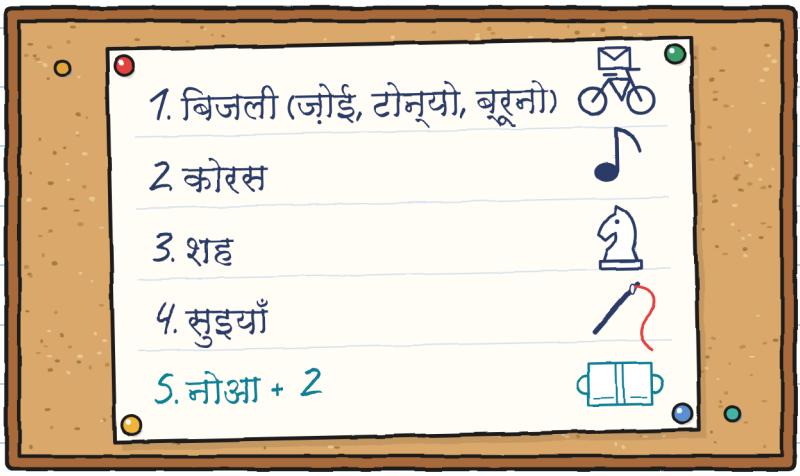
क्या पहले पहुँचना ज़रूरी है?

शनिवार को मैंने शनिवार वाली नारंगी टी-शर्ट पहनी।
"तुम डायरी से मेल खाते हो," जूलिता ने कहा।
ग्यारह बजे आँगन के दोनों दरवाज़े सालों में पहली बार खुले थे। दोनों से लोग अंदर आ रहे थे। आइरीन ने सीटी बजाकर नियम बताए:
"हर टीम अपना सामान सभी स्टेशनों से होते हुए यहाँ लाएगी। सामान के साथ दौड़ते नहीं। जो दौड़ता है, वह हिस्सा दोबारा करता है। जो दोबारा नहीं करता, वह समय बचाता है।"



पाँच टीमें थीं। "बिजली" साइकिल पर एक लिफ़ाफ़ा ले जा रही थी। कोरस एक म्यूज़िक स्टैंड। शतरंज वाले एक विशाल बोर्ड। सिलाई वाले बिना सिर का एक पुतला।

हमारी टीम नोआ ने सोमवार को लिखी थी, मुझसे मिलने से पहले:



"हम 'नोआ + 2' हैं," मैंने जूलिता से कहा।
"मैं 2 हूँ," उसने कहा। "और तुम 'प्लस' हो।"

हर टीम उसी दरवाज़े से निकलती थी जहाँ उसका सामान सोता था। हमें रवाना एंटोनियो अंकल ने किया। वे पास रहते हैं और दौड़ते नहीं।

मारा ने छोटा थिएटर निकाला। नोआ ने पट्टा जल्दी बाँधा और हमने उसे उठाया। क्लैक! एक पैनल खुल गया।

"नीचे रखो," मैंने कहा।

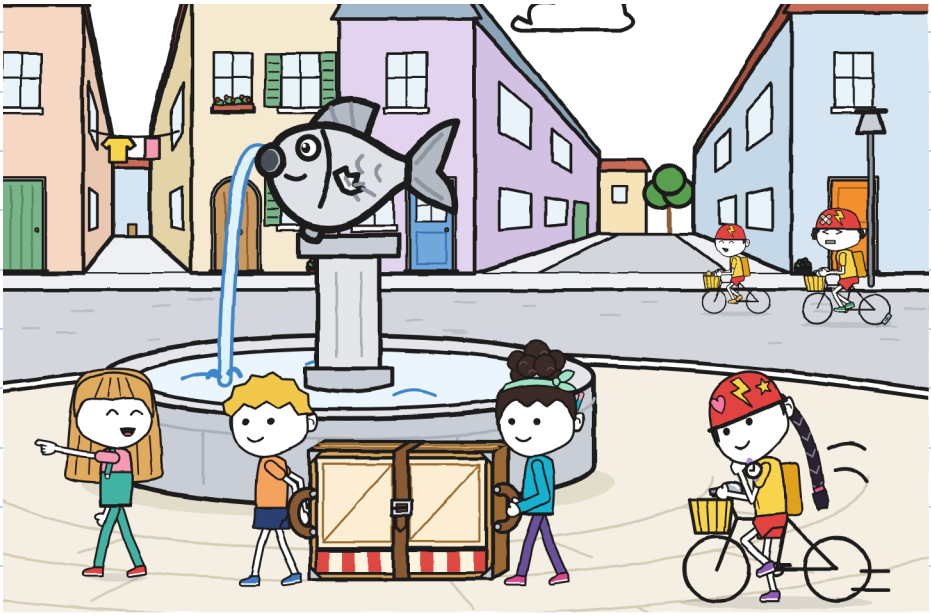
किसी ने बहस नहीं की। नोआ ने पट्टा फिर बाँधा, धीरे से, तीसरे छेद में। उसने दो बार खींचा।

एंटोनियो अंकल ने अपनी टोपी नीचे की: रवानगी का झंडा।

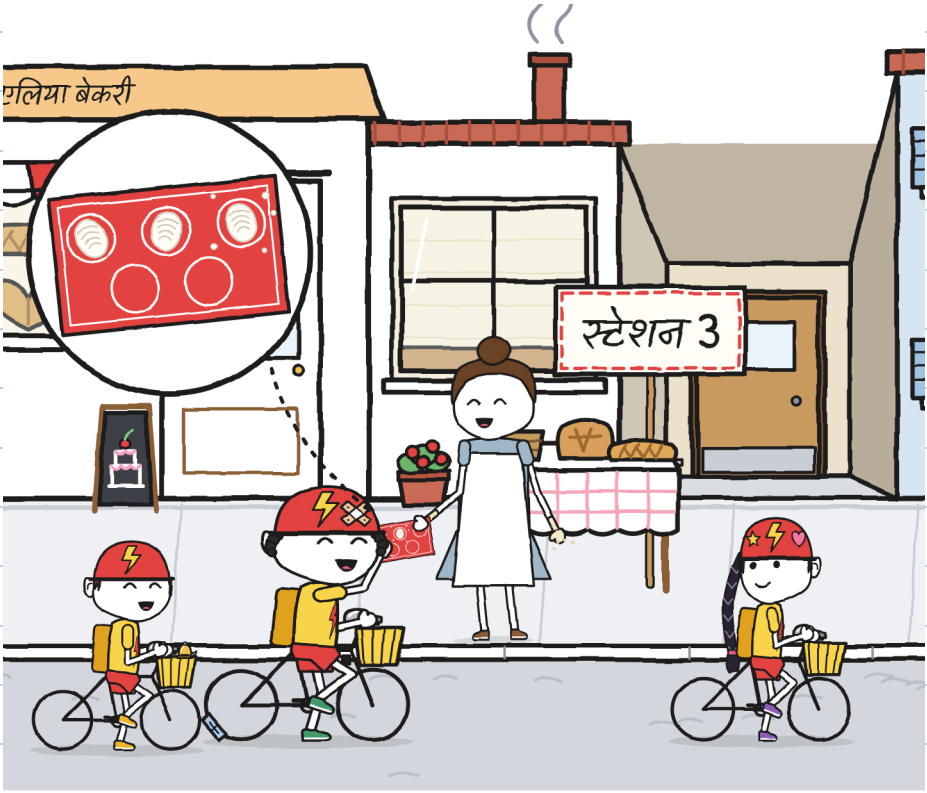
"आराम से," उन्होंने कहा। "ऐसे ही पहुँचते हैं।"



पहला हिस्सा। जूलिता दिशा बता रही थी।
“पाँच क़दम... बाएँ मोड़!”
“पट्टा!”
हम धीरे-धीरे लंगड़ी मछली के चारों ओर घूमकर कोना घेर रहे थे। ज़ोई साइकिल पर आई। वह सबसे आगे थी। उसने ब्रेक लगाया और एक पैर ज़मीन पर रख दिया।
“तुम लोग निकलो। उसके साथ दौड़ते नहीं।”
ज़ोई तब तक रुकी रही जब तक हम मोड़ से निकल नहीं गए। फिर चली गई। हम बीस सेकंड आगे रहे। यह समय उसने ख़ुद नापा।



हर स्टेशन पर एक कार्ड पर मुहर लगती थी। बेकरी पर एलिया आटे से भरे अँगूठे से मुहर लगाती थीं।
"बिजली" हमारे आगे से तीन बार निकली, हर बार किसी और सड़क से। टोन्यो दोनों हाथ हैंडल पर रखे था और मोड़ों पर घंटी बजाता था। ब्रूनो के पास लिफ़ाफ़ा था। ज़ोई हर स्टेशन पर इंतज़ार करती थी। तीनों के आने तक वह कार्ड को हाथ नहीं लगाती थी।



दूसरे हिस्से में कोरस अपने म्यूज़िक स्टैंड के साथ हमसे आगे निकल गया। वे दौड़ रहे थे। आइरीन की सीटी बजी और वे धीरे-धीरे गाते हुए फ़व्वारे तक लौट गए।

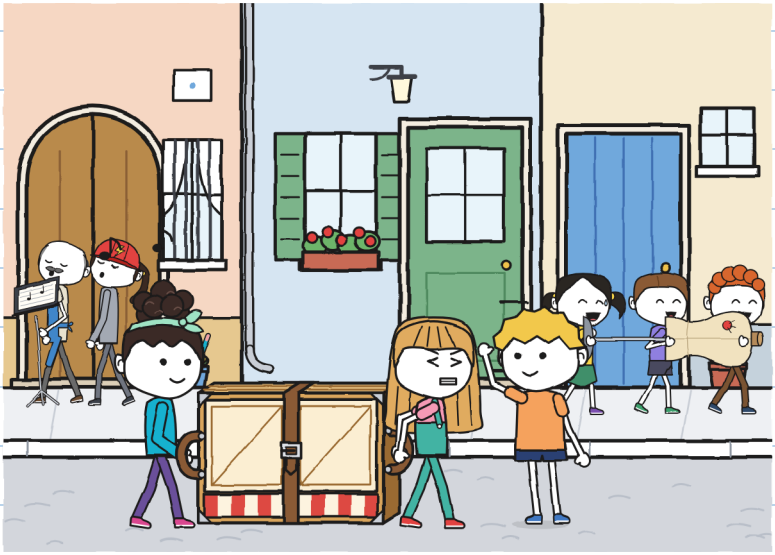
शतरंज वाले हमसे आगे निकल गए। यहाँ तक कि पुतला भी हमसे आगे निकल गया।

जूलिता दौड़ी नहीं। यानी: उसका एक पैर चल पड़ा। वह उसे वापस ले आई।

"क्या पहले पहुँचना ज़रूरी है?"

"लेबल पर 'पहले' नहीं लिखा," नोआ ने कहा। "'तह' लिखा है।"

"कर्ब," मैंने कहा।



तीसरा हिस्सा। नोआ ने फाटक तक दिशा बताई। वहाँ हमने छोटे थिएटर को ज़मीन पर रखा।

"रास्ता कौन खोलेगा?" जूलिता ने पूछा। और इंतज़ार किया।

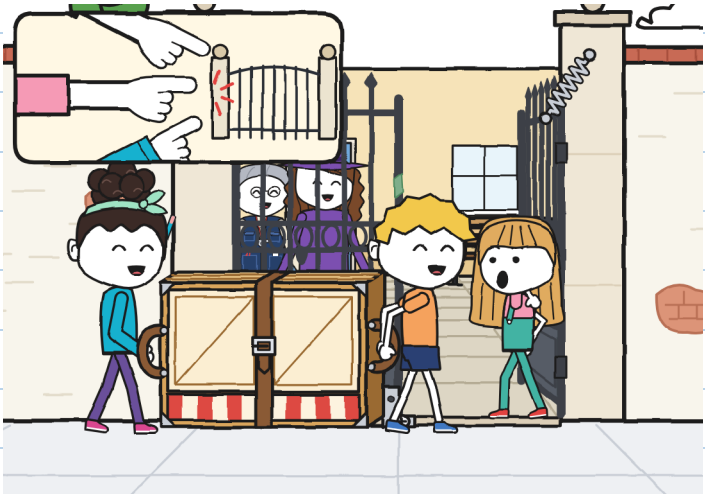
हम तीनों ने एक साथ, एक ही जगह इशारा किया। नोआ ने फाटक की ओर। जूलिता ने फाटक की ओर। मैंने फाटक की ओर। हम हँस पड़े: ऐसे तय नहीं होता कि कौन।

"तुम," नोआ और मैंने कहा। और नोआ अपने हत्थे पर आ गई।

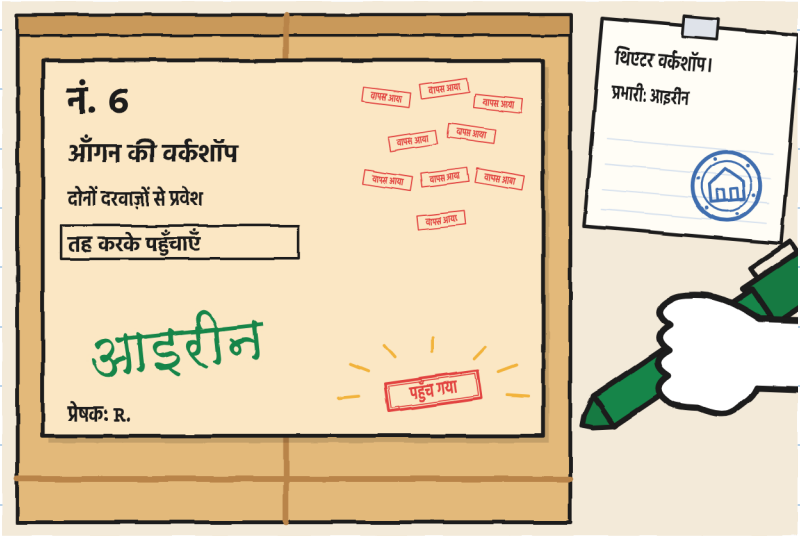
जूलिता ने फाटक को पीठ और हाथों से पकड़ा।

"रुको! मैं पल्ला पकड़ती हूँ! निकलो!"

हम निकल गए। तह होकर। पूरा।

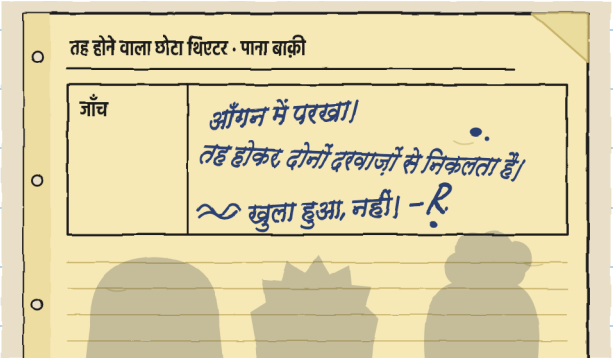


“इकतालीस मिनट,” आइरीन ने कहा।
“बिजली” को चौदह मिनट लगे। तीनों साइकिलों के पास बैठे थे, पसीने के बिना।
मारा डिब्बा बग़ल में दबाए आईं। आइरीन ने आँगन की ज़मीन पर तह किए हुए छोटे थिएटर को देखा, पट्टा अपनी जगह पर। उन्होंने मारा को रजिस्टर का पन्ना दिखाया।
जूलिता ने आइरीन को हरा मार्कर दिया।
“मेरे काम का है,” आइरीन ने कहा। और लेबल पर दस्तख़त कर दिए।



लेबल पर “पहुँच गया” शब्द उभर आया। किसी ने उसे नहीं लिखा।

आइरीन ने इन्वेंटरी खोली, यानी केंद्र की चीज़ों की सूची। छोटे थिएटर का पन्ना पहले से था, एक पुरानी पंक्ति और बहुत ख़राब लिखावट के साथ।



"यह मुझसे पहले की है," आइरीन ने कहा। "मुझे नहीं पता कि कौन है।"

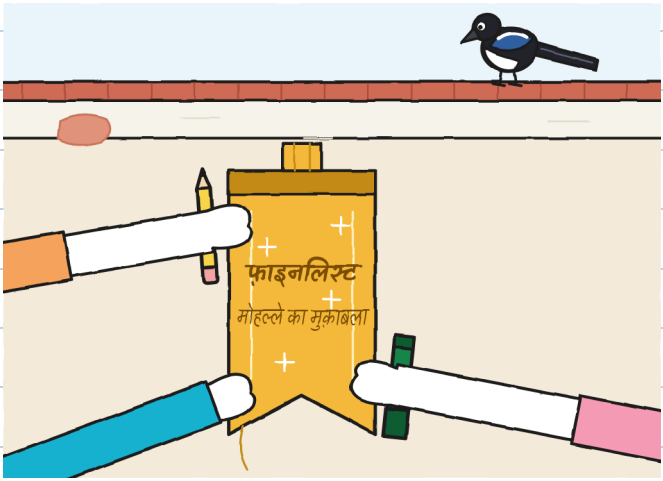
"हमें भी नहीं," जूलिता ने कहा। "पर हम धीरे-धीरे जान रहे हैं।"

R. का उस आँगन में आना हुआ था। भेजने से पहले R. ने छोटे थिएटर को परखा था। इस बार R. ने दोनों दरवाज़े नापे थे: फाटक और पुराना दरवाज़ा।

एलिया का दरवाज़ा। आँगन के दोनों दरवाज़े। दरवाज़े नापना R. की आदत है। इसे मैं कार्ड के लिए रख लेती हूँ। –ज.

“बिजली” जीती, एक भी हिस्सा दोहराए बिना। इनाम था एलिया की एक बड़ी ब्रेड जिस पर आटे से 1 बना था। ज़ोई ने उसके तीन हिस्से किए। ब्रूनो का हिस्सा ज़ोई के हिस्से जितना ही था।

जो टीमें पूरा सामान लेकर पहुँचीं, उन्हें आइरीन ने एक रिबन दिया।



“फ़ाइनलिस्ट वह होता है जो सबसे आख़िर में आता है,” जूलिता ने कहा।
“वह जो आख़िर तक पहुँचता है,” नोआ ने कहा।
“हम आख़िर तक पहुँचे, सबसे आख़िर में,” मैंने कहा।
“दोनों सही हैं।”

“यह यहाँ है,” आइरीन ने कहा। “इसे पहली बार इस्तेमाल करते हैं।”

मारा और आइरीन ने उसे खोला। हम पीछे थे। हमारे पास नाटक गढ़ने के लिए दो मिनट थे। नोआ ने भूमिकाएँ बाँटीं। पहले उसने पूछा:

“कौन कम बोलना चाहता है?”

मैंने हाथ उठाया।

चूरा वेरा से छूटी और एक मीटर उड़ी। वह एक पैनल पर बैठ गई, पूँछ खिड़की के आगे लटकी हुई। नाटक हो चुका था, और हमने अभी शुरू भी नहीं किया था।



नाटक का नाम था "वह पार्सल जो अंदर नहीं आना चाहता था"। जूलिता मारा थी, काग़ज़ की टोपी पहने। नोआ सारे दरवाज़े थी। मैं पार्सल था, खिड़की पर।

"वर्कशॉप?" नोआ कहती। "यहाँ, सिलाई।"

"वापस आया," मैं कहता।

मैंने यह नौ बार कहा। दर्शक गिन रहे थे। दसवीं बार नोआ ने बाँहें फैला दीं, और मैंने दूसरा शब्द कहा।

सलाम करने के लिए हम तीनों खिड़की से झाँके। हम समा गए। सटकर।

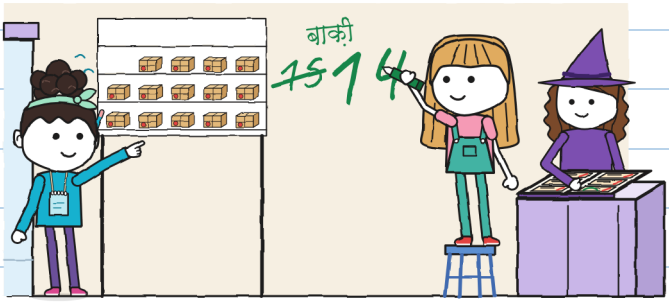


टुकड़ों में बाँटा नहीं जाता। एक को सटना पड़ता है। –ज.

अध्याय 6

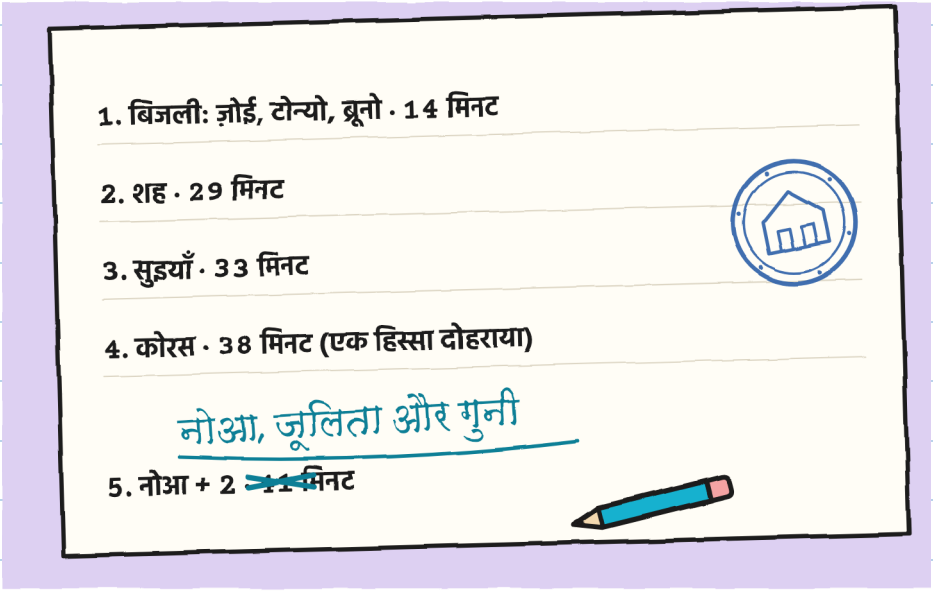
मुक़ाबला ख़त्म होने पर क्या बचता है?

शाम को हम लेबल लेकर दुकान लौटे। नोआ भी आई।
जूलिता ने पोस्टर देखा, फिर मारा को।
"क्या मैं?"
"यह तुम्हारा पोस्टर है।"
जूलिता ने 15 काट दिया और बड़ा करके 14 लिख दिया।
मारा ने लेबल अपनी किताब में चिपका दिया, बाक़ी पाँच के साथ।



नोआ ने उन्हें धीमे से गिना। उसे चौदह मिले। उसे गिनना आता है। —ज.

टोन्यो नतीजों की सूची लाया। मैंने उसे डायरी में लिख लिया।



मैंने उसे दो बार देखा। "ब्रूनो" पूरा था। बिना कटा और उस पर कुछ लिखे बिना।

नोआ ने अपनी फ़िरोज़ी पेंसिल से हमारी टीम वाली बात ठीक की। किसी ने उससे कहा नहीं था।
"सोमवार को मुझे तुम्हारे नाम पता नहीं थे," उसने कहा।
"ख़ैर। गुनी का नाम।"

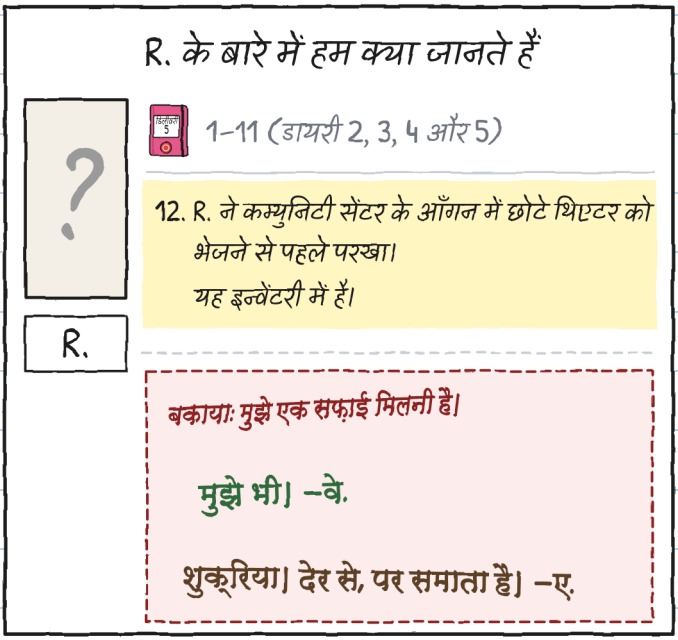
मैंने R. का कार्ड निकाला। उसमें ग्यारह सुराग़ थे। मैंने एक जोड़ा।

टोन्यो ने उसे पढ़ा। उसने अपना नोट भी पढ़ा, नीचे। उसने कुछ नहीं काटा।

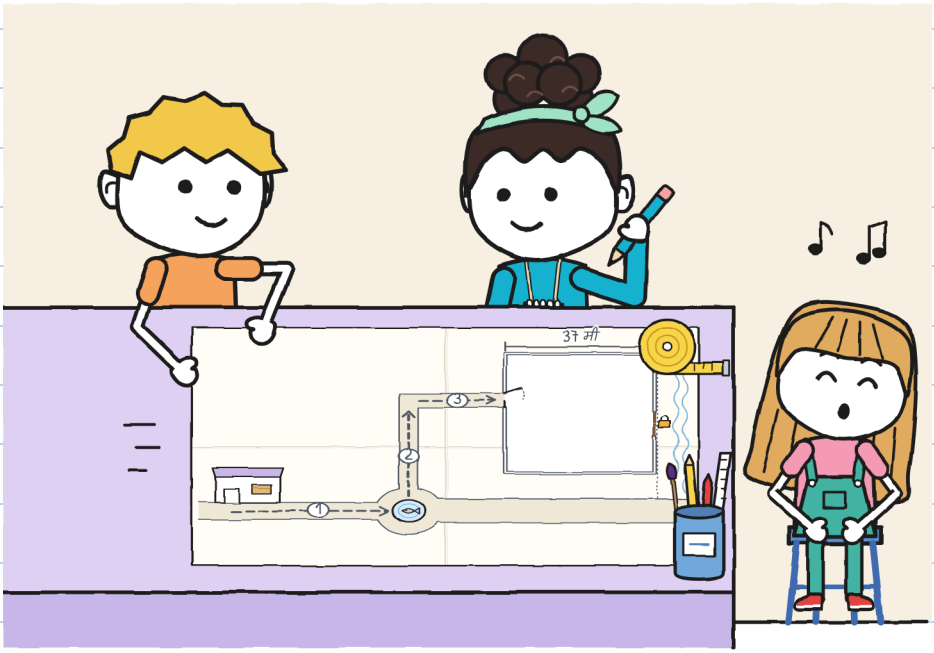
"छोटे थिएटर को परखा," उसने कहा। "मेरी घंटी को नहीं परखा।"

"यह हमें पता नहीं," जूलिता ने कहा।

"मेरी घंटी की किसी भी इन्वेंटरी में एक भी लाइन नहीं है," टोन्यो ने कहा। और यह भी सच था।

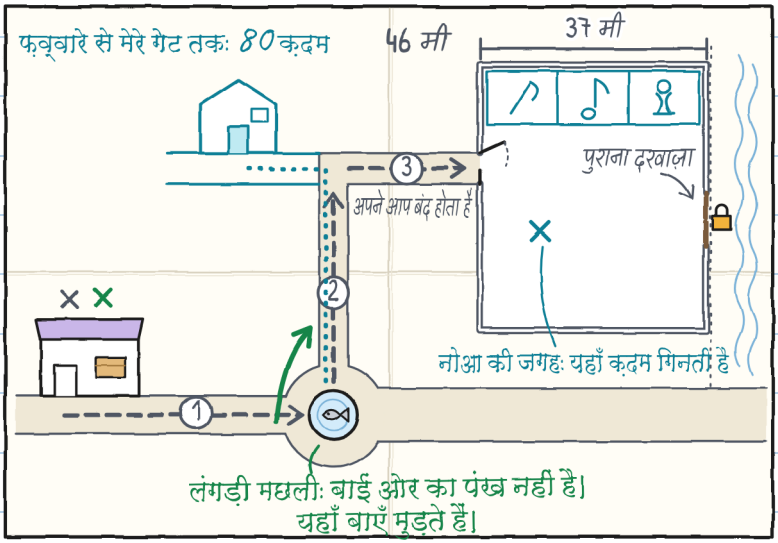


फिर मैंने नक़्शा काउंटर पर रखा। वह अब तह नहीं था।
"तुम्हारा हिस्सा नहीं है," मैंने नोआ से कहा। "फ़व्वारे से उधर जो कुछ है। उन गलियों के बारे में मुझे सिर्फ़ मीटर पता हैं।"
नोआ ने जूलिता को देखा। जूलिता ने छत की ओर देखा: उसका बीच में न पड़ने का तरीक़ा।
"क्या मैं इस पर बना सकती हूँ?"
"इसीलिए तो दिखा रहा हूँ।"
नोआ ने कान से पेंसिल निकाली।



नोआ ने अपनी गली, अंदर से सेंटर और दूरियाँ क़दमों में जोड़ दीं। मैंने बग़ल में मीटर लिखे। जूलिता से और इंतज़ार नहीं हुआ और उसने फ़व्वारे का बोर्ड लिख दिया।

तीनों का मोहल्ले का नक़्शा



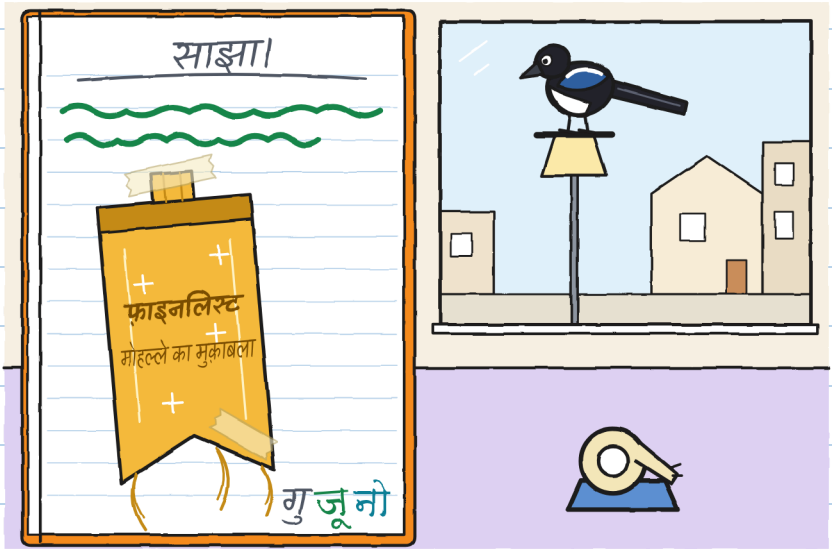
जब वे रंग भर रही थीं, उन्होंने मुझे लंगड़ी मछली की कहानी सुनाई। वह लंबी है। उतनी अच्छी नहीं है जितना वे कहती हैं। पर अब मुझे आती है।

वह बहुत बढ़िया है। पर हमने उसे बुरी तरह सुनाया: हम एक साथ बोल रही थीं। –ज.

जूलिता ने रिबन कलाई पर बाँध रखा था। उसके तीन धागे खुले हुए थे।

"अगर मैं इसे रखूँ, तो सोमवार तक सिर्फ़ धागे बचेंगे," उसने कहा। "इसे डायरी में रख लें?"

हमने उसे पहले पन्ने पर, "साझा" के नीचे, हर कोने पर टेप के एक टुकड़े से चिपका दिया। मैंने उसे उसके खुले धागों के साथ बनाया। अगर बिखरेगा, तो बिखरेगा। मैं इसे जितना नया है उससे ज़्यादा नया नहीं बनाऊँगा।



मेरी डायरी तुम्हारी डायरी जितनी अच्छी तरह बंद नहीं होती। इसलिए। –ज.

नोआ ने मेरी इजाज़त से पन्ने पीछे की ओर पलटे। वह लकीरों वाले कोने तक पहुँची।

"और यह?"

"एक हिसाब जो मैं ग़लत रखता था।"

"और यह दूसरा?" उसने ज़ोर से पढ़ा: "'फाटक को पत्थर भी रोक सकता है।'"

"यह मैंने मंगलवार को सोचा था।"

"पत्थर 'कब' नहीं कहता," नोआ ने कहा। "और 'रुको' पंद्रह बार भी नहीं।"

मैंने लकीरें नहीं मिटाईं। पेंसिल की हैं, मिट सकती थीं, पर मैं नहीं चाहता था।



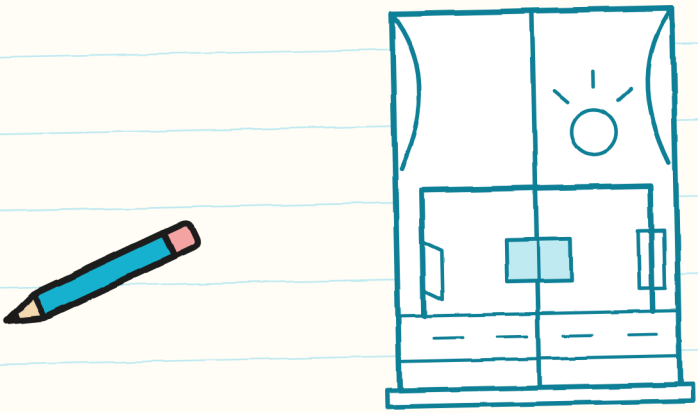
इन्हें मत मिटाओ। ये थोड़ी-सी मेरी भी हैं। –ज.

रविवार को भोर में नोआ ने निगरानी रखी। वह सेंटर के सामने रहती है। नौ बजे वह दुकान पर एक पर्ची लाई। उसमें क़दम गिने हुए थे।

7:38: छोटा थिएटर, वर्कशॉप में, तह।

7:44: सुबह हो रही है। हिलता नहीं।

7:50: वहीं है। उसके चले हुए क़दम: शून्य। –नोआ

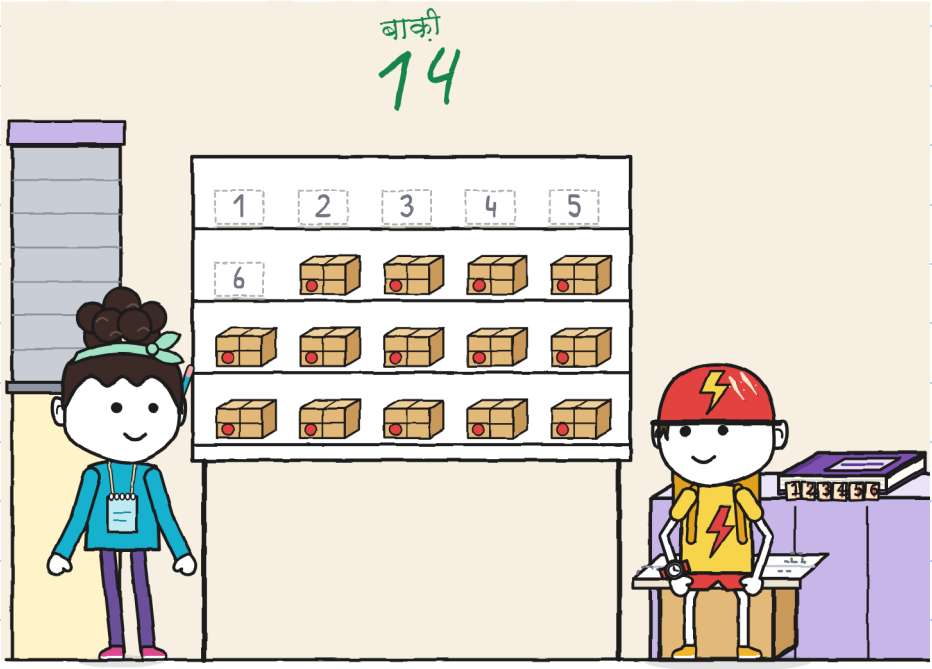


वह मुझसे अच्छी निगरानी करती है, मुझसे अच्छा गिनती है और रोटी नहीं बनाती। तीन में से दो। –ज.

मारा ने हमें निकलने देने के लिए शटर थोड़ा उठाया। मैंने शेल्फ़ बनाई: चौदह पार्सल और छह ख़ाली जगहें। पोस्टर बदलना नहीं पड़ा।

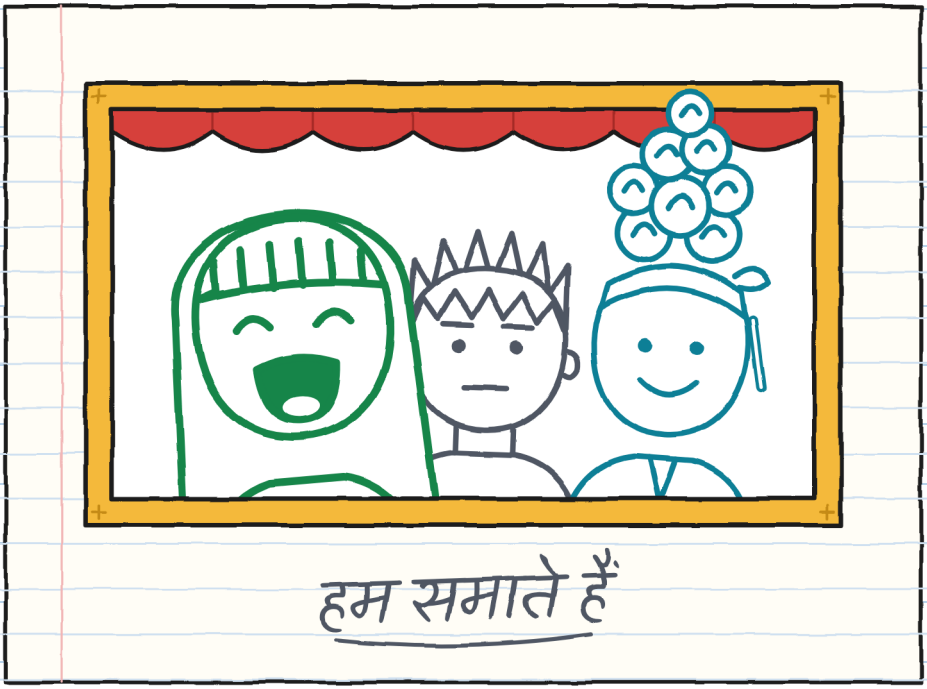
"छह," मारा ने कहा। और अपनी किताब बंद कर दी।

टोन्यो अपने डिब्बे पर था, हेलमेट पहने, जबकि रविवार था। नोआ दरवाज़े के पास खड़ी रही। किसी ने उससे "बैठो" नहीं कहा। किसी ने "जाओ" नहीं कहा। वह अपनी मर्ज़ी से आई थी। और सोमवार को उसकी रिहर्सल है।



डायरी पूरी करने के लिए मैंने छोटे थिएटर की ख़ाली खिड़की बनाई।

सबने ख़ुद को अंदर बनाया। मैंने पेंसिल से। जूलिता ने हरे में। नोआ ने फ़िरोज़ी में। नोआ ने मेरी डायरी में बनाने के लिए इजाज़त माँगी। जूलिता ने नहीं।



साझा तो साझा है। यह पहले पन्ने पर लिखा है। –ज.

डिलीवरी नं. 6। हिस्सा-दर-हिस्सा:

हिस्सा		किसने उठाया	किसने राह दिखाई	क्या दोहराना पड़ा
	दुकान → लंगड़ी मछली वाला फ़व्वारा	गुनी और नोआ	जूलिता	फ़व्वारे का मोड़ (तीन बार)
	फ़व्वारा → नुक्कड़	जूलिता और नोआ	गुनी	कुछ नहीं (पर धीरे)
	नुक्कड़ → आँगन	गुनी और जूलिता	नोआ	प्रवेश: नक़्शा पुराना था
	शनिवार	तीनों	तीनों, बारी-बारी से	पट्टा (दूसरी बार में, तीसरे छेद में)
	हमसे पहले	मारा, अकेले	कोई नहीं	नौ सफ़र
	R.	?	?	हमें नहीं पता

	उठाना 	दिशा बताना 	रास्ता खोलना 	आगाह करना 
1	गुनी और नोआ	जूलिता	जूलिता	जूलिता
2	जूलिता और नोआ	गुनी	गुनी	गुनी
3	गुनी और जूलिता	नोआ	नोआ	नोआ

तीन ख़ाने। या यों कहें, चार। तीन नाम। कोई ख़ाली नहीं। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 7

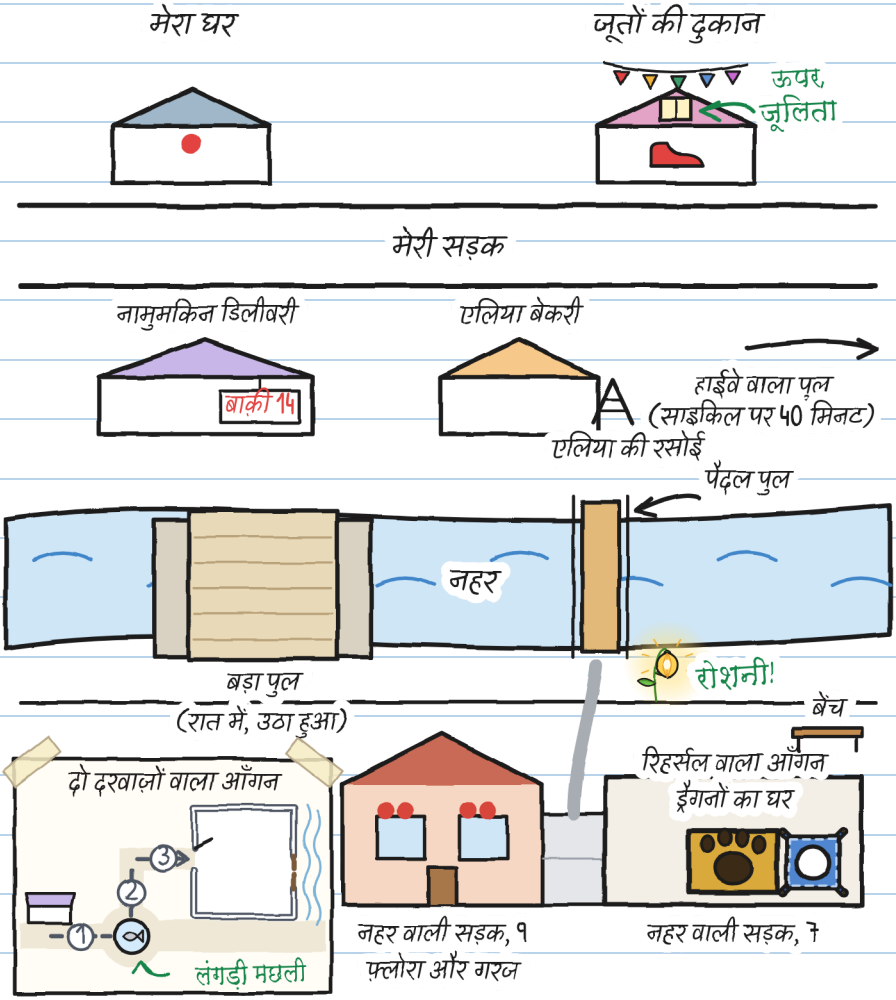
(बहुत जल्द)



इस बार लेबल में एक वक़्त लिखा था। उस वक़्त मैं पहले से पजामे में होता हूँ।

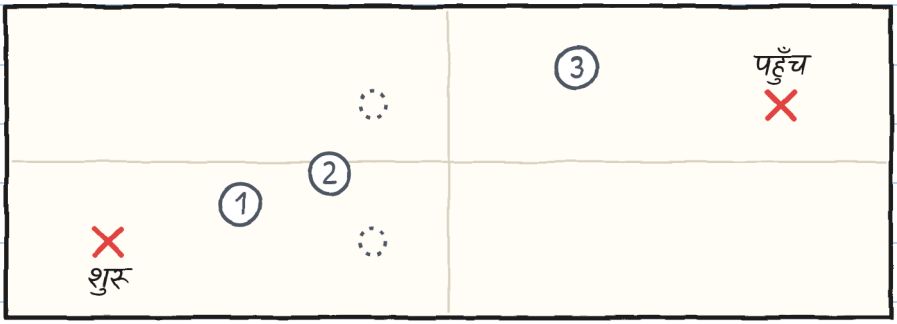
बाक़ी सबके बंद करने पर कौन जागता है? मेरे अलावा। –ज.

मोहल्ला (संस्करण 6)


मेरा घर
जूतों की दुकान
ऊपर,
जूलिता
मेरी सड़क
नामुमकिन डिलीवरी
बाक़ी 14
एलिया बेकरी
हाईवे वाला पुल
(साइकिल पर 40 मिनट)
एलिया की रसोई
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात में, उठा हुआ)
बेंच
दो दरवाज़ों वाला आँगन
रिहर्सल वाला आँगन
इंगनों का घर
लंगड़ी मछली
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरज
नहर वाली सड़क, ७

तुम्हारा सफ़र

उठाता कौन है? दिशा कौन बताता है? रास्ता कौन खोलता है? आगाह कौन करता है?



तीन का मीटर

	उठाना	दिशा बताना	रास्ता खोलना	आगाह करना
हिस्सा 1				
हिस्सा 2				
हिस्सा 3				

अगर किसी खाने में हमेशा एक ही नाम आए, तो उसे बदल दो। –ज.

एक कहानी, छह साइज़

छह साइज़ हैं, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाएँ। XXS, XS, S, M और L के पन्ने और चित्र एक जैसे हैं। XL एक उपन्यास है। बस कहानी कहने का तरीक़ा बदलता है।

साइज़ XXS · PRE-A1
गुनी ने एक शब्द लिखा और जगह छोड़ दी। क्या तुम्हें "साझा" शब्द दिख रहा है?

साइज़ XS · A1
मैंने बस एक शब्द लिखा। आधा पन्ना ख़ाली छोड़ा। वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

साइज़ S · A2
पहले पन्ने पर मैंने एक शब्द लिखा। आधा पन्ना ख़ाली छोड़ दिया, कि क्या पता। वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

साइज़ M · B1
पहले पन्ने पर मैंने बस एक शब्द लिखा। आधा पन्ना ख़ाली छोड़ दिया, कि क्या पता। वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

साइज़ L · B2
पहले पन्ने पर मैंने बस एक शब्द लिखा और आधा पन्ना ख़ाली छोड़ दिया, कि क्या पता। वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

साइज़ XL · B2–C1
सचित्र उपन्यास · 13+

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं।

हर कोई अपने साइज़ में। छोटा थिएटर वही। —ज.

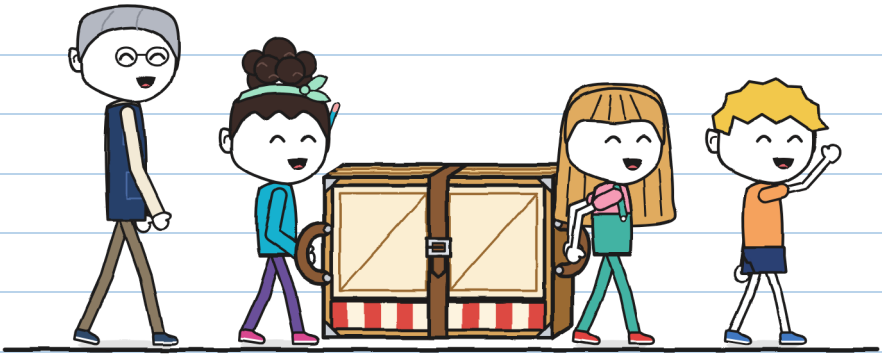
परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

असली ढुलाई: क्या करना चाहिए

1. निकलने से पहले, पूरा रास्ता देख लो।
2. एक इंसान ख़ाली हाथ चलता है; दरवाज़े खोलता है और आगाह करता है।
3. हाथ हत्थों पर। हिंज और कुंडियों से दूर।
4. सामान उठाकर न दौड़ते हैं, न मुक़ाबला करते हैं।
5. अगर कोई "रुको" कहे, तो सब रुक जाते हैं।
6. पहले ज़मीन पर रखते हैं; फिर बहस करते हैं।
7. बड़ी चीज़ को दो लोग मिलकर, किसी बड़े के साथ, खोलते और तह करते हैं।

"सिर्फ़ कहानी में" की मुहर उस चीज़ पर लगती है जो कहानी में हो सकती है, पर असली ढुलाई में नहीं।



और अगर तुम्हें रास्ते के बारे में कुछ पता है, तो पहले बता दो। –ज.